अनुक्रमणिका

इन एकांकियों की
अभिनयता में मेरे सहयोगी
'भाई जी'
श्री प्रो० मिट्ठनलाल माथुर
को
सस्नेह

प्रस्तावना

'राम रहमान'' और अन्य नाटक एकांकी हैं। ये सन् ४०-४१ से लेकर ४८ तक की कृतिया हैं। वनस्थली विद्यापीठ, शिक्षण क्षेत्र में जो नवीन दिशा दिखा रहा है—उसको मेरे इन नाटकों के निर्माण का श्रेय है।

ये सब नाटक विद्यापीठ में विविध उत्सवों और समारोहों पर लिखे गये थे, और लिखे गये थे खेले जाने के लिए। अभिनीत हो चुकने के कारण ये अभिनय की कसौटी पर सफल कहे जा सकते हैं। नाटक एक दृश्य काव्य—रूप से पहले अभिनेय है, पठनीय, श्रव्य पीछे।

इन नाटकों में एक राजनीतिक राष्ट्रीय आदर्शवाद की शृंखला है। जिस युग में ये लिखे गये हैं उसकी पूरी छाप इन पर होनी चाहिए थी। इनसे यदि अब भी कोई सन्देश मिले, अच्छा ही है।

इनके गीतों को स्वर देने में वनस्थली के संगीताचार्य श्री चन्द्रशेखर शिराली भट्ट और श्री दिगम्बर जनार्दन फड़के को जो कलात्मक सहयोग और साहचर्य्य रहा है उसके लिए मुझसे अधिक इनके रसज्ञ पाठक कृतज्ञ होंगे। अभिनेत्री छात्राओं को क्या धन्यवाद दूं ? इन नाटकों का सौन्दर्य अभिनय में ही तो मैंने पाया है।

'तिलक दिवस'
१ अगस्त १९४८

—सुधीन्द्र

खून की होली

रचनाकाल:—

[होली, २००१ वि० १९४५ ई०]

पात्र परिचय

राजनारायण : एक देशभक्त पुरुष (नायक)

आनन्दी : राजनारायण की पत्नी

चन्द्रा : राजनारायण की १५ वर्षीया विवाहिता पुत्री

अशोक : राजनारायण का दश वर्षीय पुत्र

अरुण : राजनारायण का आठ वर्षीय पुत्र

मुन्नी : राजनारायण की छः वर्षीया पुत्री

चुन्नी : राजनारायण की चार वर्षीया पुत्री

गोरा पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट, भारतीय सब इन्स्पेक्टर, तीन सिपाही

स्थान — भारत का एक नगर

काल — [१९४३ ई० (२००० वि०) की होली]

अभिनय भूमिका

यह एकांकीरूपक वसन्त, २००२ वि० पर वनस्थली विद्यापीठ की छात्राओं द्वारा शान्ता-सदन में अभिनीत किया गया था।

अभिनय-भूमिका इस प्रकार थी :—

राजनारायण	—	कुमारी मनोरमा
आनन्दी	—	कुमारी कमला
चन्द्रा	—	कुमारी शकुन्तला द्विवेदी
अशोक	—	कुमारी यशोदा माहेश्वरी
अरुण	—	कुमारी सावित्री शर्मा
मुन्नी	—	कुमारी मृदुला
चुन्नी	—	कुमारी उमारानी माथुर
गोरा पुलिस	—	कुमारी सुवीरा
भारतीय पुलिस सब इन्स्पेक्टर	—	श्री रुक्मिणी परमार
सिपाही (१)	—	कुमारी चन्द्रकला गोयल
(२)	—	कुमारी चन्द्रकला यादव

पहला दृश्य

स्थान : (एक कोठी का एक बड़ा कमरा) **समय :** प्रातः

[राजनारायण खद्दर का कुर्ता. टोपी और धोती पहने बैठे हैं। पास में एक कुर्सी पर पुलिस सब-इंस्पेक्टर वर्दी में हैं और दो सिपाही एक ओर खड़े हैं। राजनारायण के पास धरती पर आनन्दी नीचा सिर किये बैठी है; आनन्दी की वेशभूषा भारतीय गृहणी की सी है]

राजनारायण—तुम अपना मन क्यों बिगाड़ रही हो आनन्दी! राष्ट्रमाता के पवित्र चरणों में हम सबका रक्त भी गिर जाय तो हमारे मुँह पर हँसी की रेखा रहनी चाहिये। शताब्दियों के बन्धनों को काटने के लिये हम सबको न जाने कितनी बार बन्धन में पड़ना होगा। बलिदान की ओर जाते हुए सैनिक के मार्ग में हँसी के फूल बिखेरो आनन्दी! उसके हृदय पर आंसुओं का हार पहनाकर कारागार को दुखद स्मृतियों से न भर दो। आनन्दी को ये आँसू शोभा नहीं देते!

आनन्दी — परतंत्र देश की मुक्ति के संग्राम में सरकार की शक्तियों को कुण्ठित करना ही विजय है। उस संग्राम में जूझ कर रक्तदान देदेना तो स्वयं पुरस्कार है; परन्तु घर बैठे आत्म समर्पण करके बन्दी होजाना तो जीवन की सबसे बड़ी हार है।

राजनारायण—विजय सम्पूर्ण होने के पहिले हार ही कही जाती है और हार के पहिले मिलने वाली विजय तो मृग तृष्णा है।

आनन्दी—परन्तु कुछ करके मरने में तो फिर भी सन्तोष है। बिना कारण नरक के अंधेरे में घुल घुल कर गलने में भी कोई सुख है? आपके इस सत्य ज्ञान को मैं नहीं पा सकती।

राज० —यह प्रकाश जेल की अन्धकार भरी कोठरी में मिलेगा, जहाँ ममता मोह के बन्धन टूट जाते हैं और मन और हृदय रिक्त हो जाते हैं।

आनन्दी—(थानेदार से प्रार्थना के स्वर में) मैं इनसे थोड़ी देर एकान्त में कुछ कहना चाहती हूँ। क्या आज्ञा मिलेगी?

थानेदार—(स्वीकृति सूचक सिर हिलाकर) लेकिन जल्दी कीजिये। (घड़ी देखकर) जाइये—पाँच मिनट का अवकाश है।

(राजनारायण और आनन्दी एक ओर से भीतर जाते हैं)

थानेदार—बड़ी निडर मालूम होती है यह औरत।

छज्जूराम—बेशक

गंडासिंह—बेशक

थानेदार—लेकिन........

राज० —(थानेदार के पास आकर) तो चलिये, मैं तैयार हूँ।

(आनन्दी थाली में से रोली लेकर राजनारायण के तिलक करती है और सूत की माला पहनाती है। राजनारायण चलने को तैयार होते हैं।

(अरुण, अशोक तथा चन्द्रा का प्रवेश)

अरुण — (माता से लिपट कर) पिता जी कहाँ जारहे हैं, माँ?

अशोक— (पिता से लिपट कर) पिता जी आप कहाँ जारहे हैं?

(चन्द्रा प्रश्नसूचक मुद्रा में देखती है)

राज० — (दोनों बच्चों को पुचकार कर सिर पर हाथ फेरते हुए) मैं कुछ दिनों के लिये बाहर जारहा हूँ। तुम लोग खूब खुश रहना। चन्द्रा दीदी यहाँ है ही। अशोक तुम पढ़ने में मन लगाना। चन्द्रा तुम माँ को बहलाना। ईश्वर ने चाहा तो मैं जल्दी ही लौटूँगा।

अरुण — पिताजी मेरे लिये अच्छी अच्छी किताबें लाइयेगा सुन्दर २ तस्वीरों वाली।

राज० — अच्छा बेटा !

अरुण — और मेरे लिये मोटर लाइये और मुन्नी के लिये घोड़ा और चुन्नी के लिये गुड़िया। और जल्दी आना पिताजी। माँ, पिताजी कब आजायेंगे ?

राज० — होली तक ज़रूर आजाऊँगा अन्नू। तुम्हारे लिये मोटर लेता आऊँगा।

अरुण — और मुन्नी के लिये घोड़ा भी।

राज० — हाँ मुन्नी के लिये घोड़ा भी।

अरुण — और चुन्नी के लिये गुड़िया भी।

राज० — (गाल पर प्यार की चपत लगाकर) हाँ, हाँ चुन्नी के लिये गुड़िया भी। पर ये दोनों शैतान हैं कहाँ—इन्हें बुलाना तो चन्द्रा।

(चन्द्रा जाकर बुला लाती है। राजनारायण चन्द्रा के सिर पर हाथ रखकर एक बार सबको प्यार करके आनन्दी की ओर स्निग्ध दृष्टि से देखकर पुलिस के साथ विदा होते हैं)

—लघुजवनिका गिरती है—

दूसरा दृश्य

स्थान : (उसी कोठी का एक दूसरा कमरा)   समय : दोपहर

आनन्दी—(प्रवेश करते हुए) जाते समय कहते थे 'उनका कोई अपराध नहीं ! कुछ पत्र अवश्य इधर उधर लिखे थे; न उन्होंने कुछ किया । फिर भी सरकार ने उनको पकड़ लिया' ।

(दूसरी ओर से चन्द्रा का प्रवेश)

चन्द्रा —पिताजी का कोई समाचार नहीं आया अम्मा ? जेल से पत्र डालने तो देते हैं ।

आनन्दी—डालने तो देते हैं परन्तु इस बार तो बड़ी कड़ाई की है सरकार ने ।

(नेपथ्य में "चिट्ठी लेना जी" की ध्वनि । चन्द्रा दौड़कर बाहर जाती है । और एक लिफाफा लेकर आती है । आनन्दी फाड़कर और पढ़ कर प्रसन्न होती है) ।

चन्द्रा —किसका पत्र है अम्मा !

आनन्दी—तेरे पिताजी का ।

चन्द्रा —(आश्चर्य और प्रसन्नता से) पिताजी का ! जेल से आया है न ?

आनन्दी—नहीं वे जेल से भाग गये हैं । (लिफाफे पर मुहर देखकर) कलकत्ते की मुहर है ।

चन्द्रा —(उत्सुकता से) क्या लिखा है पिताजी ने ?

आनन्दी—(पत्र पढ़कर सुनाती है) तुम्हारे ये शब्द—'आत्म-समर्पण करना जीवन की सबसे बड़ी हार है'—जेल में मेरे कानों में में गूँजते रहे और हृदय में भयंकर उथल पुथल होती रही। सोचता रहा, क्या ऐसे ही देश को स्वतन्त्रता मिलेगी? सत्याग्रह और आत्म समर्पण और फिर लम्बे कारावास की कहानी इतिहास बन गई है; पर देवी स्वतन्त्रता तो मृग-तृष्णा के जल की भाँति दूर हटती जा रही है। सोचा—यह देश ही एक बड़ी भारी जेल है फिर छोटी जेल में पड़े पड़े सड़ने से तो बाहर कुछ काम करना ही अच्छा है। तुम्हें, मैं नहीं जानता, इससे प्रसन्नता होगी या अप्रसन्नता। पर तुम्हारे शब्दों ने ही मुझे यह भी करने को विवश किया है।

अब काम की बात यह है कि पुलिस मेरे पीछे है। पाँच हज़ार रुपये का इनाम सरकार ने घोषित किया है। मैंने सुना है कई मित्र इनाम हथियाने की ताक में हैं। हाय, भगवान इस देश का क्या होगा?

होली तक तुम्हारे पास यह पत्र पहुँचेगा। चुन्नी, मुन्नी, अन्नू, अशोक सबको मेरी ओर से खूब प्यार करना। वे सब मेरी राह देखते होंगे। उन्हें मोटर, घोड़ा, गुडिया सब मँगा कर देदेना। कह देना मैंने ही भिजवाई हैं। बेचारे बच्चे! चन्द्रा तो ससुराल नहीं गई होगी? उसे ससुराल भिजवा देना। अच्छा विदा, न जाने कब मिलना हो। होली पर तुम लोग रंग की होली खेलना, हम लोगों को खून की होली ठीक रहेगी। बस विदा—

(राजनारायण)

चन्द्रा —पिताजी न जाने क्या करने वाले हैं! अम्मा, एक दो अंग्रेज अफ़सरों को मार डालेंगे; यह होगी खून की होली। क्या इससे स्वराज्य मिल जायेगा? (प्रश्न-मुद्रा में देखती है)

आनन्दी—बेटी, इस स्वराज्य का नाम न ले। आज इसका नाम लेना भी अपराध है। दीवारों के कानों ने भी सुन लिया तो हम लोग निरपराध पकड़े जायेंगे। यह पत्र तो अभी जला देती हूँ। जा दियासलाई तो ले आ। (चन्द्रा जाती है) न जाने भविष्य के पृष्ठ पर भाग्य क्या लिखने वाला है। और जीवन कितना छलनामय है, जहाँ सत्य पर अविचल रहना भी एक अपराध है।

[चन्द्रा दियासलाई लेकर आती है; पत्र जला दिया जाता है]

आनन्दी—परन्तु, चन्द्रा! खुफिया पुलिस को तो अवश्य पत्र का पता चल ही गया होगा। न जाने कब हमारा घर घिर जाये? तुमको अपने घर भेजने की फिक्र करनी है। जा तो ज़रा रामो की चाची को तो बुला ला।

(चन्द्रा जाती है)

आनन्दी—(स्वगत) निरपराध को पकड़ कर सरकार सचमुच अत्याचार करती है। परन्तु विदेशी शासन के विरुद्ध कोई काम न करने से ही क्या, उसको उलट देने का विचार करना भी तो अपराध है। वे बिलकुल निरपराध हैं; यह तो मैं कैसे कहूँ? परन्तु उन्होंने जेल से भाग कर तो आफ़त ही मोल लेली है। पाँच हज़ार का लोभ बहुत बड़ा है।

कई स्वार्थी दुष्ट उन्हें पकड़वाने की ताक में होंगे। अब क्या करूँ? मेरा दिल धड़क रहा है। पुलिस ज़रूर आती होगी। चन्द्रा को तो ससुराल भेज दूँगी पर इन छोटे छोटे बच्चों का क्या होगा..............(सिर पर हाथ रखकर चिन्तामग्न हो जाती है—और इसी मुद्रा में चली जाती है)

—लघुजवनिका उठती है—

अरुण —ए ए.........वह पिचकारी छोड़ी—अहा हा हा (उछलकर ताली बजाता हुआ) बड़ा मज़ा है! श्यामू के सारे कपड़े लाल हो गये। जैसे खून ही खून.............क्यों जीजी बोलती क्यों नहीं?

चन्द्रा —(उग्र स्वर में) चल तुझे तो खून सूझता है। खून की भी होली होती है?

(अरुण का मुँह मुरझा जाता है)

अशोक —(कुछ सोचकर) होती है दीदी। बताऊँ—लाना तो अन्नू, मेरी 'पिचकारी' आज ही तो माँ ने मँगा कर दी है।

(कविता याद करता हुआ)

सुखी स्वाधीन हैं जो
है उन्हीं को रंग की होली
गुलामों के लिये होली
सदा है खून की होली

(आनन्दी का प्रवेश)

आनन्दी—क्या खून की होली खेली जारही है। (चन्द्रा की ओर देखकर) तू रोई है चन्दा! तेरे गाल पर आँसू के दाग़ हैं (अशोक से) क्यों अशोक क्या हुआ है इसे?

(चन्द्रा चुप रहती है)

अन्नू बेटा! दीदी क्यों रोई है?

अरुण —यह तो बताती नहीं माँ। दादा ने पूछा पिताजी कब आयेंगे? होली भी तो आगई, तो रोने लगी। क्यों माँ कब आयेंगे पिताजी?

आनन्दी—(अपने आंसुओं को रोकती हुई गद् गद् कंठ से) पिताजी ! वे नहीं आयेंगे। वे तुम सबसे रूठ गये हैं। तुम लोग उन्हें बड़ा तँग करते हो। वे नहीं आयेंगे कभी। (फूट फूट कर रोने लगती है।)

अशोक —नहीं आयेंगे कभी ? तो हमारी होली ?

आनन्दी—(सम्भल कर) तू अभी खून की होली गा रहा था न अशोक ? फिर गातो एक बार।

अशोक —गाउँ—(याद करता हुआ)

सुखी स्वाधीन हैं जो
हैं उन्हीं को रँग की होली
गुलामों के लिये होली
सदा हैं खून की होली

आनन्दी—तुम्हारे पिताजी ऐसी ही खून की होली खेलेंगे आज। तुम रँग की होली ही खेल लो।

अशोक —ना, माँ हम लोग तो पिताजी की तरह खून की ही होली खेलेंगे !

अरुण — कैसे खेलते हैं खून की होली ?

आनन्दी—(अरुण के चपत लगाकर) बड़े आये खून की होली खेलने वाले तुम अभी नन्हे बच्चे हो बेटा। खून की होली तो बड़े खेलते हैं। तुम्हारा खून होली खेलने के लिये नहीं है मेरे लाल। (अरुण और अशोक को चिपटा लेती है।)

(मुन्नी और चुन्नी लड़ती हुई आती हैं)

मुन्नी —ऊ ! ऊ ! ऊ ! मेली मोतल (माँ से लिपटकर) माँ चुन्नी ने मेली मोतल छीन ली।

चुन्नी — तो इसने मेरी पिचकारी क्यों ली ?

आनन्दी —(मुन्नी के आँसू पोंछती हुई) अच्छा मुन्नी तू इसकी पिचकारी दे दे। मैं तुझे दूसरी पिचकारी दे दूँगी।

अरुणा — माँ हम भी पिचकारी लेंगे ?

अशोक —हाँ माँ! सड़क पर जाकर रामू, श्याम और केशव के घर जाकर धूम मचायेंगे। लाल लाल गुलाल भी मँगा दे माँ।

(घर पर खटखटाने की आवाज)

आनन्दी —देखो! कोई बुला रहा है। तुम खेलो मैं देखती हूँ कौन है ?

—लघु यवनिका गिरती है—

चौथा दृश्य

[राजनारायण के घर का द्वार]

(तीन सिपाही और एक थानेदार द्वार पर खड़े हैं। दरवाजे का किवाड़ भीतर से बन्द है। थानेदार अपनी पिस्तौल से किवाड़ खटखटाता है)।

थानेदार—कोई बोलता ही नहीं है। साँकल भीतर से लगी है। क्या सब मर गये ? (एक बार फिर खट् खटाता है।)

(भीतर से आवाज आती है। कौन है ?)

थानेदार—हाँ, बोला तो (जोर से) खोलिये दरवाजा। आपके नाम एक जरूरी कागज़ है।

(भीतर से जरूरी कागज ? क्या मतलब ?)

थानेदार—आपके नाम 'इनाम' है। आपके पतिदेव ने भेजा है उसे ले जाइये।

(भीतर से—इनाम ? उन्होंने भेजा है ? क्या कह रहे हैं आप ? यह सब झूँठ है। आप लोग सच न कहेंगे तो किवाड़ नहीं खुलेंगे।)

थानेदार—दरवाजा खोलना पड़ेगा।

(भीतर से—नहीं खुलेगा। आपको जो करना हो सो कर लीजिये।)

थानेदार—अच्छा ! 'जो करना हो कर लीजिये' एक औरत की इतनी हिम्मत । अहमदखाँ किवाड़ तोड़ डालो । इस गुस्ताख औरत को मज़ा चखा दिया जाये । बगावत करने चले हैं । आज इसको भी मालूम हो जाये कि सरकार के खिलाफ बगावत करने का क्या इनाम मिलता है । अँग्रेजी सरकार का नमक खाया है छज्जूराम । देखना नमकहरामी न हो जाये । तोड़ दो दरवाजा । मैं मकान की दूसरी तरफ जाता हूँ । कहीं वह खिड़की से भाग न जाये :

(थानेदार जाता है सिपाही दरवाजा तोड़ने का प्रयत्न करते हैं । अँग्रेज सुप्रिन्टेन्डेन्ट का प्रवेश)

अंग्रेज सुप्रिन्टेन्डेन्ट—यह क्या करटा है टुम लोग ?

अहमदखाँ—(सलाम करके) हुजूर ! थानेदार साहब का हुक्म है कि मकान के किवाड़ तोड़कर अन्दर घुस कर इस घरवाली को गिरफ्तार कर लिया जाय । उसके नाम वारंट है ।

अंग्रेज अफसर—अच्छा ! टुम लोग अम लोगों का शच्चा वफादार नौकर जान परटा हैं । जाओ इन्सपेक्टर कहाँ है ।

अहमद खाँ—मकान के दूसरी तरफ गये हैं हुजूर !

अंग्रेज अफसर—अच्छा तो अम लोग भी उडर चलें ।

(किवाड़ तोड़कर सिपाही हल्ला करते हुए एक ओर से चले जाते हैं)

—लघुजवनिका उठती है—

पांचवां दृश्य

स्थान : (राजनारायण के घर का वही बड़ा कमरा)

[बच्चे होली खेल रहे हैं। एक दूसरे को गुलाल लगाते हैं और पिचकारी छोड़ते हैं। एक ओर से कमरे के कोने में आनन्दी का प्रवेश]

आनन्दी—(स्वगत) ये तो सब खेल रहे हैं। कितने भोले हैं ये सब। ये क्या जानें कि क्या होने वाला है? इनको बतला दूँ? नहीं ये क्या समझेंगे। इन्हें खेलने दूँ! सिपाही इनसे क्या बोलेंगे। वारण्ट तो मेरे नाम है मुझे पकड़ ले जायेंगे।

(एक बार बड़ी ममता की दृष्टि से देखकर चली जाती है)

(चन्द्रा का प्रवेश)

(दूसरी ओर से सिपाही और थानेदार का प्रवेश)

थानेदार—(लड़कों से)—अरे क्या तमाशा मचा रखा है। बात सुनो।

(मुन्नी और चुन्नी का अम्मी पुलिस, अम्मी पुलिस कहते हुए घर के अन्दर भाग जाना)

अरुण —होली खेलोगे तुम तो—(पिचकारी चला देता है। थानेदार की वर्दी रँग जाती है)।

कन्नूराम—(अरुण को डण्डा मारकर) अरे यह क्या किया! (बच्चा रोने लगता है)। सबके सब कपड़े खराब कर दिए।

चन्द्रा —आज तो होली है साहब ! पिताजी नहीं आये तो आप ही सही। होली के दिन बुरा नहीं मानते।

छज्जूराम—चुप रहो।

थानेदार—अहमदखाँ ! पकड़लो इनको।

चन्द्रा —(आगे बढ़कर) हाँ, हाँ पकड़ लो हमको। क्या करोगे हमारा लो। हम लोग भागे थोड़े ही जाते हैं। मारडालो इन्हें।

थानेदार—पकड़लो इसे भी। पूछो इन सबसे इनकी माँ कहाँ है। ये सब 'खून की होली' में शामिल हैं।

चन्द्रा —अच्छा तो आप लोग खून की होली खेलने वालों को पकड़ने आये हैं। पकड़िये हमें हम खेलेंगे खून की होली।

थानेदार—अच्छा अच्छा बकबक मत करो (पिस्तौल से धमकाता हुआ) बताओ तुम्हारी माँ कहाँ है।

चन्द्रा —हमें मालूम नहीं।

अशोक —हमें मालूम नहीं।

अरुणा —हमें मालूम नहीं।

थानेदार—हूँ तुम्हें मालूम नहीं। यह पिस्तौल देखी है। अभी एक ही गोली में सबको उड़ा दूँगा।

अशोक —करेगी क्या हमारा तोप की, बन्दूक की गोली।
हमें तो खेलनी है आज अपने खून की होली।

थानेदार—खून की होली खेलने वालों को गोली भी खानी पड़ती है।

अशोक —बड़े लाट साहब आये। हमारे पिताजी को भी गोली खिला आये हो मालूम पड़ता है।

थानेदार—और तुम्हारी माँ को भी गोली खानी पड़ेगी।

चन्द्रा —बाबा बेक़सूरों पर क्यों आँख दिखाते हो। ये तो बच्चे हैं।

थानेदार—ये बच्चे नहीं हैं, छोटे सांप हैं। कैसी लम्बी ज़बान चलाते हैं। (बच्चों से) बताओ बताते हो या नहीं तुम्हारी मां कहाँ है ?

अशोक —नहीं, नही, नहीं।

अरुण —नही, नहीं, नहीं।

थानेदार—अच्छा तो चलती है गोली (पिस्तौल तान कर)

अशोक —हमारे पास भी गोली है। (हँसता हुआ पिचकारी मारता है पिचकारी आगे तान करके) यह लो होली की गोली।

[पिचकारी छोड़ देता है थानेदार के मुँह पर पिचकारी लगती है। उसके हाथ की पिस्तौल चलती है—गोली अशोक को पार करके अरुण को भी लगती है। दोनों एक दूसरे पर हाय री अम्मा, हाय पिताजी। हाय हमारी खून की होली, खून की होली की चीख पुकार करते हुए मर जाते हैं]।

थानेदार—(चन्द्रा से) लो देखो ! तुम भी चलाओगी गोली ?

चन्द्रा — हाय हत्यारे! तुमने मेरे भाइयों को मार डाला। सचमुच गोली चला दी। तुमने खून की होली खेल ली।

थानेदार—(सिपाहियों से) चलो, ढूढ़ो उस बागी औरत को भी।

(आनन्दी का सहसा प्रवेश। सामने छोटे छोटे चुन्नी मुन्नी आते हैं।)

आनन्दी —हाँ, ढूढ़ो मुझे। मैं खुद आ गई हूँ। (सिर पड़े बच्चों की ओर देखकर) हाय ! यह क्या ? तुमने मेरे बच्चों का खून कर दिया। हाय मेरे कलेजे के टुकड़े टुकड़े कर दिये निर्दयी। तूने यह क्या किया। इन बेक़सूर बेबस फूल जैसे बच्चों ने तुम्हारी क्या बग़ावत की थी। क्या तुम्हारी वफ़ादारी यही सिखाती है। (चुन्नी, मुन्नी को आगे करके) लो इन्हें भी खालो। भूखे भेड़ियो ! इनका खून भी चाटलो। नर पिशाच ! इनके खून से तुम्हारी प्यास बुझ जायगी, राक्षसो !

(सहसा गोरे सुप्रिन्टेन्डेन्ट का प्रवेश)

(सारा दृश्य देखकर ठिठका रह जाता है)

गोरा सुप्रिन्टेन्डेन्ट—ओ गॉड मर्डर ! मर्डर ! (थानेदार से) टुमने यह क्या कर डाला सब इंस्पेक्टर ?

थानेदार—हुज़ूर ! ये बच्चे गुस्ताखी से पेश आ रहे थे !

सिपाही अहमदखाँ—हुज़ूर ! इन्होंने पिचकारी से हुज़ूर (थानेदार की ओर संकेत करके) की वर्दी खराब करदी थी।

गोरा सु०—(पैर पटक कर) यू डैम फूल ! ब्लडी ! (थानेदार से) रास्कल !

थानेदार—(घबड़ाता हुआ) हुज़ूर मैंने वफ़ादारी की है। अंग्रेज सरकार के नमक का बदला चुकाया है।

गोरा सु०—यू ब्लैक इंडियन ! काला हिन्दोस्तानी ! टुम गुलाम है ! टुम्हारा इमान यही बोलटा है। तुम्हारा इन्सान किदर मर गया ? टुम्हारी वफ़ादारी यही सिखाटी है कि बेकसूर चोटे, चोटे बच्चों का खून कर दो। ओफ ये चोटे चोटे बच्चे। ये फूल जो अभी और सिखना मांगटा था तुमने पिस्टौल से भून दिया।

थानेदार—हुज़ूर !

गोरा सु०—शट अप ! चुप रहो। तुम लोग का इन बच्चों ने क्या बगावट किया ठा ? इसके बाप ने जो किया उसका सज़ा उसको मिल गया। इस औरट के नाम वारण्ट ठा—बच्चों को शूट करने का हुक्म टुमको किसने डिया था। अम टुम पर मुकडमा चलायगा।

थानेदार—हुज़ूर ! (गोरे सुप्रिन्टेन्डेन्ट के पैरों पर गिरता है)।

गोरा सु०—(ठोकर मारकर) कुछ नेई। हिनोस्टान में जब टक टुम जैसा वफादार नौकर है। टब टक उसको आज़ाद होने का कोई हक़ नहीं है।

—जबनिका गिरती है—

राखी

रचनाकाल :—

[राष्ट्रीय सप्ताह १९४१ ई०]

पात्र परिचय

अशोक	:	एक राष्ट्रीय युवक (२५ वर्ष)
सुभाष	:	अशोक का छोटा भाई (६ वर्ष)
विजय लक्ष्मी	:	सुभाष से बड़ी और अशोक से छोटी बहन (१२ वर्ष)
कल्याणी	:	अशोक, सुभाष और विजय-लक्ष्मी की माँ (४० वर्ष)

जुलूस के व्यक्ति—सिपाही आदि।

स्थान — भारत का एक नगर

समय — [१६४१ ई० का रक्षाबंधन-दिवस]

❀ अभिनय भूमिका ❀

यह एकांकीरूपक रक्षाबंधन (सं० २००३ वि०) पर वनस्थली विद्यापीठ की छात्राओं द्वारा अभिनीत हुआ था।

अभिनय भूमिका इस प्रकार थीः—

अशोक	—	कुमारी सुवीरा
सुभाष	—	कुमारी स्वतन्त्रता
विजय लक्ष्मी	—	कुमारी शकुन्तला द्विवेदी
कल्याणी	—	कुमारी जयन्ती

राखी

पहला अङ्क

१

समयः—प्रातः

स्थानः—घर का कमरा

[एक बड़ा कमरा दिखाई देता है, जिसकी दीवारें हल्के पीले रङ्ग से पुती हुई हैं। सामने की दीवार में एक द्वार है, जो खुला हुआ है। द्वार के दोनों ओर दो खिड़कियां हैं, जिनके ऊपर दो चित्र लगे हुए हैं— एक लोकमान्य तिलक का, दूसरा महात्मा गांधी का। द्वार के ऊपर भारत माता का चित्र है। उसके दोनों हाथों में जंजीरें बँधी हैं। हिमालय मुकुट के रूप में चित्रित है, गङ्गा-यमुना कंठहार के रूप में। उत्तरीय करधानी अंचल लहराता हुआ बंगभूमि और ब्रह्मदेश तक चला गया है। चरणों में समुद्र लहरा रहा है और उसमें लङ्का को कमल कुड्मल के रूप में अङ्कित किया गया है। दांये हाथ में राष्ट्रीय ध्वजा है। खिड़कियों पर कुछ रङ्गीन रेशमी पर्दे भी लगे हैं। फर्श मर्मर प्रस्तर खण्डों से जटित है, जो काले और सफेद रङ्गों के हैं. एक ओर धरती पर अधूरा अल्पना-चित्र अङ्कित है। विजयलक्ष्मी, एक द्वादश वर्षीया बाला, केशरी उत्तरीय, श्वेत कंचुकी और हरित वर्ण लँहगा पहने हुए अल्पना बनाती हुई गाती है—]

* गान *

आज मनोरम मंगल वेला
लेकर राखी आई !
सज-धज आई बहन तुम्हारी
तुम भी आओ भाई !

* * *

अभिनन्दन में थाल लियेकर,
धर कर अक्षत-रोली सुन्दर
आशाएँ राखी में आकर
अगणित आज समाई !

* * *

आज मनोहम मंगल वेला
लेकर राखी आई !
सज-धज आई बहन तुम्हारी
तुम भी आओ भाई !

* * *

[गाते गाते उठ कर एक चौकी जिस पर सुन्दर नक्काशी है। लाकर बिछा देती है। थाल में एक ओर रोली है, अक्षत है और बीच में खादी के केसरिया सफेद और हरे धागों से बनी हुई राखियां हैं, जो उसने बड़ी लगन से बनाई हैं। इतने ही में किसी की आहट सुनती है। सफेद खादी का कुरता, धोती और टोपी पहने अशोक आता है]

अशोक—

[विजयलक्ष्मी को बाहों में जकड़ कर] भला ऐसा हो सकता है विजया ? राखी बांधने के समय तक आजाऊंगा।

[नेपथ्य में 'वन्देमातरम्', 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे]

वह देखो जुलूस आगया है, अब मैं जाऊं !

[अशोक कल्याणी की ओर देखता हुआ चप्पल पहनता है और चला जाता है। विजयलक्ष्मी थोड़ी देर तक उसे देखती रहती है, फिर माता की ओर प्रश्न सूचक मुद्रा में देखती है।

कल्याणी—

तुम अपनी राखी बांधने का उपक्रम करती रहो बेटी ! जवाहर तुम्हारी राखी बंधवाने के लिए जल्दी ही आयेगा। सुभाष कहां गया है ? देखूं, उसे तो खोजूं ! [जाती है]

[विजयलक्ष्मी पुनः गाने लगती है—]

(गीत का शेषांश)

इन दो धागों में है पावन,
मृदुल स्नेह के बन्धन अनगिन !
तोड़ेंगे सब बाधा बंधन,
इनसे बंधी कलाई !
आज मनोरम सुन्दर वेला,
लेकर राखी आई !
सज-धज आई बहन तुम्हारी
तुम भी आओ भाई !

एक ओर चली जाती है।

—लघुयवनिका-पतन

विजयलक्ष्मी—

[खड़ी होकर और अशोक से लिपट कर] जारहे हो भैया ? कब तक लौटोगे ? आज तो राखी है, राखी बांधने के समय तक आजाना। देर न कर देना भैया ?

अशोक—

[विजयलक्ष्मी के सिर पर हाथ फेरता हुआ] हां, हां, तेरी राखी के समय तक तो आ ही जाऊंगा। तू तैयार रहना। सुभाष तो यहीं रहेगा न ?

विजयलक्ष्मी—

सुभाष न जाने कहां चला गया है। वह तो तुम्हारे साथ जाने को को कहता था।

[कल्याणी प्रवेश करती है]

अशोक—

ना, ना, मेरे साथ क्या करेगा ? भीड़ में उसका पता भी न लगेगा ! उसे न जाने देना मां ! मैं जारहा हूँ मां !

कल्याणी—

तुम जारहे हो बेटा ! जाओ, तुम्हारे कार्यों में विजय का कुकुंम लगे।

[अशोक झुक कर मां के चरणों को छूता है। कल्याणी उसे हृदय से लगा लेती है।]

विजय लक्ष्मी—

मैंने कहा सो भूल न जाना भैया !

दूसरा दृश्य

स्थान : नगर का राज-मार्ग

समय : दुपहर

[हजारों आदमियों का एक लम्बा जुलूस छोटे बड़े राष्ट्रीय झण्डे लिये जारहा है। आगे आगे खादी के सफेद कुर्ता, धोती और टोपी तथा पैरों में चप्पल पहने अशोक जारहा है। गले में सूत की मालाएँ हैं। पीछे पीछे बड़ी भीड़ है। अशोक के पीछे की टोली प्रयाण गीत गाती चल रही है]

प्रयाण-गीत

बढ़ चलो, बढ़ चलो!
धीर वीरो चलो!
करतलों पर अमर
प्राण धर धर चलो!
मत झुको द्रोह से
मत रुको मोह से
मत रुको लोह से
आन से मत टलो!

* * *

तुम स्वयं आग हो,
आँच से मत डरो!
तुम अटल हो अचल

शीश नत मत करो;
तुम जियो या मरो,
पग न पीछे धरो,
ओज—आशा भरो,
तुम विजय को वरो !
आग में तुम जलो,
स्वर्ण से तुम गलो !
स्नेह में तुम पलो,
रूप में तुम ढलो,
बढ़ चलो, बढ़ चलो,
धरि वीरो चलो,
करतलों पर अमर
प्राण धर धर चलो !

[सारी भीड़ एक साथ—'भारत माता की जय !' महात्मा गांधी की जय !! एक ओर से कुछ महिलाएं धानी साड़ी और केसरिया चोली पहने हाथों में आरती और रोली के थाल लिये आती हैं। जुलूस थमता है। वे एक एक करके अशोक के मस्तक पर तिलक और अक्षत लगाती हैं। जुलूस फिर चलने लगता है]

सामने क्रांति की
है किरण आरही;
है अमर गीत ही
वह विजय आरही

शौर्य्य बरसा रही,
सौख्य सरसा रही,
चेतना की लहर
प्राण भर—पा रही
पाप परतन्त्रता
पुण्य स्वाधीनता
माँग वरदान लो
और फूलो फलो!
बढ़ चलो, बढ़ चलो,
धरि वीरों चलो,
करतलों पर अमर
प्राण धर धर चलो!

[फिर नारे—'भारत माता की जय' 'कौमी नारा—इन्कलाब जिन्दाबाद !' जुलूस एक ओर निकल जाता है।]



तीसरा दृश्य

समय : तीसरे पहर   स्थान : घर

[विजयलक्ष्मी उसी परिचित कमरे में बैठी एक गान गाती जाती है]

※ गान ※

भुजा-बीच कंकण बनी आज राखी !
मधुर स्नेह-बन्धन बनी आज राखी !!
जिसे बांध भाई अचल भार झेले !
सुमन-हार सा मान अंगार खेले !!
प्रलय-बीच रक्षण बनी आज राखी !
भुजा बीच कंकण बनी आज राखी !!
मधुर स्नेह-बन्धन बनी आज राखी !!!

[गाते-गाते खिड़की में से राजमार्ग की ओर झांकने लगती है। इतने ही में दरवाजे की ओर आहट सुन कर पीछे देखने लगती है। सामने से कल्याणी आती है]

विजयलक्ष्मी—

[कल्याणी के पास जाकर] मां, अशोक भैया अब तक नहीं लौटे ! और भापी (सुभाष) भी न जाने कहाँ चला गया ? वही आजाता तो उसी के राखी बाँध देती ! भैया कह गये थे कि राखी बांधने के समय तक लौट आऊंगा विजया !

कल्याणी—

[विजयलक्ष्मी के सिर पर हाथ रख कर] आता ही होगा बेटी !

सुन रही हूँ कि जुलूस बड़ा लम्बा बना है। बड़ा जोश उमड़ा है सारा बाजार राष्ट्रीय गीतों से गूंज रहा है। जिधर देखो उधर अशोक की ही चर्चा सुनाई पड़ रही है।

विजयलक्ष्मी—

[आंखों में उल्लास भर कर] मां भैया को सभी लोग बड़ा चाहते हैं। नगर का नगर आज तो उनके साथ उमड़ पड़ा है। अभी कृष्णा आई थी, वह भी यही कह रही थी।

कल्याणी—

हां, बेटी, जवाहर ने आज सत्याग्रह किया है न ?

विजयलक्ष्मी—

(कुछ न समझ कर) 'सत्याग्रह' क्या होता है माँ !

कल्याणी—

(विजयलक्ष्मी के माथे पर हाथ फेरती हुई) तू अभी भोली है बेटी ! तू क्या समझेगी ? अच्छा, तू यह तो जानती ही है कि हम कौन देश में रहते हैं ?

विजयलक्ष्मी—

यह भी न जानूंगी, माँ ! हमारा देश हिन्दुस्तान है. जिसके सिर पर हिमालय का ऊंचा मुकुट है, चरणों में विशाल समुद्र लहरा रहा है, कमर में विन्ध्या की करधनी पड़ी हुई है। हाथ में तिरंगा झण्डा है।

(नेपथ्य में से गीत गाता-गाता सुभाष आता है)

[दोनों मुग्ध होकर सुनते हैं, सुभाष भी खद्दर का कुर्ता, धोती और टोपी पहने है]

सुभाष—

सिर पर ऊंचा मुकुट हिमाचल !
चरणों को धोता सागर—जल !
विन्ध्या कटि—किंकिणी पड़ी है
लहर रहा है श्यामल अञ्चल !

है न ! ऐसा ही है न हमारा देश ? (तीनों हँसने लगते है और मां दोनों को आलिंगन में भर लेती है !)

कल्याणी—

अरे सुभाष ! कहाँ था तू ?

विजयलक्ष्मी—

अरे भैया, तू आगया ! और दादा नहीं आये ?

सुभाष—

दादा बहुत आगे थे जीजी ! सबसे आगे ! भीड़, इतनी थी कि हमें कुछ रास्ता न मिला ! फिर घण्टा घर के पास पुलिस·········मां, कुछ समझ में नहीं आता ! दादा आज कहां गये हैं ?

कल्याणी—

वही तो सुना रही हूँ, लो, तुम दोनों ही सुनो ! तुमने जो बताया सब ठीक है। हमारा देश ऐसा ही है, पर आज तो

यह हमारा होकर भी हमारा नहीं रहा।

विजयलक्ष्मी और सुभाष दोनों (एक साथ)—यह कैसे मां!

कल्याणी—

हमारा है बेटी, हमारा देश हमारा नहीं होगा तो किसका होगा, सुभाष? जब तक हिन्दुस्तान में तुम जैसा मां का लाल जीता है, तब तक हिन्दुस्तान उसका है। पर बात कुछ और है, जिसे तुम दोनों नहीं समझ सकोगे।

विजयलक्ष्मी—

नहीं मां, हम सब समझ लेंगे। दादा तो कहते थे कि अब मैं सयानी होगई हूँ।

सुभाष

हां, हम तो समझ लेंगे मां! बताओ न हमारा देश......!

कल्याणी—

अच्छा यह तो तुम लोगों ने पढ़ा ही होगा कि हमारे देश में सम्राट चन्द्रगुप्त, अशोक, विक्रमादित्य, भोजहर्ष पृथ्वीराज जैसे बड़े बड़े राजा हुए हैं।

कल्याणी और सुभाष—

(एक साथ) हां, हां, पढा है मां!

कल्याणी—

और फिर उसके बाद कई मुसलमान बादशाह रहे अलाउद्दीन, शेरशाह अकबर...!

विजयलक्ष्मी—

हां, हाँ यह भी मैंने पढा है। फिर ?

कल्याणी—

तुम जानते हो आज हमारे देश में कौन राज्य करता है!

[दोनों निरुत्तर होकर सोचने लगते और एक दूसरे का मुंह ताकते हैं]

देखो आज कल हमारे देश में अंग्रेजों का राज्य है। वे सात समुद्र पार रहते हैं और वहीं से हम पर शासन करते हैं।

[दोनों आश्चर्य चकित रहते हैं]

चुप क्यों हो ? वे हमारे शासक हैं। हम सब दास हैं, परतंत्र हैं. उनके वश में हैं। अंग्रेजों के राज्य में हम लुट गये। सोने की चिड़िया हिन्दुस्तान दीन, दरिद्र, कंगाल बन गया! (उत्तेजित हो जाती है संभल कर) परन्तु हमारा देश अब नींद से जाग गया है। आज गांधी महाराज हमारे राजा हैं। वे अपने देश को स्वतंत्र बनाना चाहते हैं। आज कल इसी के लिये देश भर में लड़ाई छिड़ी हुई है। इसी को सत्याग्रह कहते हैं।

सुभाष—

तो भैया उसी लड़ाई में लड़ने गये हैं ?

कल्याणी—

हाँ, लेकिन बेटा! यह लड़ाई तोप, तलवार और बंदूक की नहीं है। हम तो प्रेम से अपना अधिकार वापिस चाहते हैं। अपना देश उनसे वापिस माँग रहे हैं। मारकाट नहीं

मचाना चाहते। इसे अहिंसा की लड़ाई कहते हैं।

सुभाष—

तो इसमें हथियारों का काम नहीं है मां ?

विजयलक्ष्मी—

तब तो भैया लौट आते होंगे अभी !

कल्याणी—

हां, हथियारों का इसमें काम नहीं। इसमें हम उन्हें नहीं मारते। पर दूसरे तो हमें मार सकते हैं। बल्कि हम तो अपने प्राण भी हंसते हंसते दे सकते हैं। (दोनों सुन कर स्तंभित रह जाते हैं।

[नेपथ्य में "भारत माता जय" "महात्मा गांधी की जय" आदि नारे]

लो जुलूस पास आगया है। चलो, झरोखे से देखें !

विजयलक्ष्मी—

और भैया भी आरहे होंगे। मैं तिलक की तैयारी करूं !

[कल्याणी, विजयलक्ष्मी, सुभाष झरोखे में जाते हैं। नीचे जलूस दिखाई पड़ता है अशोक सबसे आगे है। उसके गले में रंग बिरंगे फूलों और तिरंगे सूत की मालाएं पड़ी हैं। मस्तक रोली और अक्षत से चर्चित है।

विजयलक्ष्मी—

[घबड़ा कर] मां भैया के हाथों में यह हथकड़ी क्यों है ?

सुभाष—

माँ, भैया को चोरों जैसी जंजीर क्यों पहनाई गई हैं? भैया ने किसी का क्या चुराया होगा? (मां से लिपट जाता है)

कल्याणी—

हाँ,! अशोक को पकड़ लिया है। सत्याग्रह करने वालों को सिपाही पकड़ लेते हैं।

विजयलक्ष्मी—

तो मां, मेरी राखी! मेरी पूजा की थाली!! मेरा तिलक मेरा टीका!!! मेरी राखी!!!! (रुआसा मुंह कर लेती है)

कल्याणी—

[बाहों में जकड़ कर] तू उदास क्यों होती है बेटी! ला तेरी टीके की थाली ला, राखी ला, नीचे चल, राखी बाँध।

[विजय लक्ष्मी थाली लेकर आती है, तीनो जाते हैं]

चौथा दृश्य

घर का द्वार

[जुलूस रुकता है। नारों से घर द्वार गूंज रहे हैं। जवाहर सिपाही को संकेत करता है। वह ठहर जाता है। सहसा दरवाजा खुलता है। कल्याणी, विजयलक्ष्मी, सुभाष तीनों निकलते हैं। सुभाष दौड़ कर अशोक से लिपट जाता है। कल्याणी आगे बढ जाती है। अशोक कल्याणी को प्रणाम करता है। लोहे की जंजीर झनझना उठती है। कल्याणी अशोक के सिर पर हाथ रखती है। विजयलक्ष्मी रोली की थाली लिये किंकर्त्तव्य विमूढ होकर पीछे खड़ी है। कभी वह जुलूस को देखती है, कभी सिपाही को। कभी वह अशोक की कलाई की ओर देखती है, कभी उसके मस्तक की ओर जहां पहले से ही बहुत सी अक्षत-रोली लगी हुई है। कल्याणी विजयलक्ष्मी की यह दशा देख कर उसकी ओर बढती है।]

कल्याणी—

[विजयलक्ष्मी से] बेटी, ला तेरी थाली! (थाली ले लेती है) ले, लगादे भाई के तिलक, बांध दे राखी। अभी एक कलाई तेरे लिए खाली है। लोहे की राखी तो बंधी हुई है, तू अपनी राखी भी बांध दे।

[सजलनयन विजयलक्ष्मी बढती है, अपना अंगूठा रोली में लगाती है और बांह ऊंची उठाती है। अशोक सिर झुकाता है, विजयलक्ष्मी रोली मस्तक पर लगा देती है। फिर अक्षत लगाती है। फिर राखी

को संभालती है। दोनों ओर के धागों को दोनो हाथों की अंगुलियों से पकड़ कर अशोक की कलाई की ओर बढ़ाती है। अशोक के बांये हाथ में हथकड़ी है। दाहिना हाथ वह विजयलक्ष्मी की ओर बढ़ा देता है। इसी समय सुभाष अचानक चला जाता है।]

अशोक

ला, तेरी राखी, बहन मेरी, ला! (विजयलक्ष्मी राखी बांधने लगती है) तेरी राखी (बांये हाथ को ऊपर उठा कर) इस राखी से बड़ी है। इसलिये तो दाहिने हाथ में बँधी है। (बांये हाथ को झटका देकर जंजीर को झनझनाते हुए) लोहे की यह राखी तो तोड़ देने की है। आज नहीं तो, कल तोड़ कर फेंकदी जायगी।

[ऊपर झरोखे से सुभाष फूल बरसा देता है]

पर तेरी राखी अमर है। वह कभी न टूटने वाली है। यह कलाई को बल देगी कि लोहे की राखी तोड़ी जा सके। ला बांध दे अपनी अमर राखी!

[विजयलक्ष्मी राखी बांध रही है और अशोक की आंखों को देख रही है जो स्नेह और ममता से छलछला आई है। ऊपर से फूल बरसते हैं।]

—यवनिका पतन

नया वर्ष :
नया संदेश

पात्र परिचय

छाया — एक महिला

श्यामा — छाया की सखी

उमा — छाया की सखी

माधुरी — श्यामा की बालिका

सुधा — छाया की बालिका

सन्तोष बाला — एक शरणार्थिनी बाला

अभिनय भूमिका

माधुरी — कु० सावित्री भाला, कक्षा ६

सुधा — कु० सुधारानी गर्ग, कक्षा ७

छाया — कु० शकुन्तला द्विवेदी, कक्षा १०

श्यामा — कु० सुमित्रा वर्मा, कक्षा ११

उमा — सुश्री रतन भाक्सानी, कक्षा ११

सन्तोष बाला — कु० यशोदा पाण्डे, कक्षा ९



नया वर्ष : नया संदेश

स्थान : एक प्रकोष्ट

[माधुरी बैठी हुई एक कागज पर कुछ लिखती और गुनगुनाती जाती है।—]

नवयुग गूँथ रहा जय माला !

सुधा—क्या कर रही हो, यह माधुरी।

माधुरी—(सकुचाती हुई पत्र छिपा कर) नहीं, कुछ नहीं।

सुधा—नहीं, कुछ तो है, कोई गीत है क्या ? देखूँ तो (छीन लेती है)।

माधुरी—हां, गीत ही है सुधा, पढो तो— (उल्लास से देती है)

सुधा—(लय पूर्वक पढ़ती है)।

[पीछे से गुनगुनाती हुई श्यामा और छाया आती है—दोनों बालिकायें आकर लिपट जाती हैं।]

सुधा—माँ, माधुरी ने कितना सुन्दर गीत बनाया है; है न माँ।

छाया— अच्छा, यह गीत तुमने बनाया है माधुरी ! तुमने कब लिखी यह कविता (माधुरी लजाती है)।

श्यामा—आओ ! आओ। इधर आओ लजाती क्यों हो ? तुमने तो अच्छा ही काम किया है। कितना मीठा गीत है यह—

माधुरी—परन्तु, इसमें मधुर राग तो सुधा दीदी ने ही भरा है मौसी। मेरे पास तो शब्द थे, मिठास तो उन्हीं के कण्ठ की है—

सुधा—नहीं माँ, नव वर्ष के नये दिन का ही यह आनन्द है जो गीत की मिठास बन गया होगा। हाँ, माँ! नव वर्ष के नूतन दिवस के उपलक्ष में आयोजित बाल-सभा के लिए यह मंगल-गान गाना है—कैसा रहेगा?

श्यामा—नूतन दिवस के योग्य ही है यह गीत—तो जाओ अपनी तैयारी करो।

माधुरी—और तुम भी आओगी न माँ।

श्यामा—हाँ, हाँ।

माधुरी—तुम भी आना छाया मौसी।

छाया—अवश्य?

माधुरी—और तुम भी उमा भाभी।

उमा—आऊँगी।

[लड़कियाँ हाथ में हाथ डालते उछलती कूदती चली जाती हैं।]

छाया—क्या सचमुच नये वर्ष से हमारे जीवन का नया युग आरम्भ हो गया है—उमा।

उमा—नया युग तो तभी से आरम्भ हो गया जब से हमारी सोने की चिड़िया हिन्दुस्तान विदेशियों के पिंजरे से छूट कर स्वतन्त्र हो गई। १५ अगस्त हमारे स्वतन्त्र युग का पहला प्रभात था न छाया बहिन?

छाया—तब फिर आज नये दिन का इतना आनन्द क्यों है उमा।

उमा—क्योंकि प्रत्येक नई वस्तु नया जीवन, नया संदेशा लेकर आती है छाया बहिन! और तुम जानती ही यह नया वर्ष तो हमारे देश

भारत का स्वतन्त्र होने के पीछे आने वाला पहिला नया वर्ष है। क्यों न श्यामा बहिन ?

श्यामा—हाँ, अब तक हमारे यहाँ नये वर्ष आते अवश्य थे परन्तु वे हमारी दासता की जंजीरों की याद दिला जाते थे, प्रत्येक नया वर्ष हमारी परतन्त्रता की शृंखला की नई कड़ी बन जाता था—

उमा—और अब प्रत्येक नया वर्ष स्वतन्त्रता की देवी की जयमाला का एक फूल बनेगा, क्यों दीदी, यही तो तुमने अपनी कविता में लिखा है न—गाओ न —

श्यामा—गाऊँ! (गाना शुरु करती है)।

नवयुग गूँथ रहा जयमाला!

बिखरी युग युग की जंजीरें,
उखड़ी कारा की शहतीरें,
उतर गया बन्दी का बाना—
परवशता की कड़ियों वाला।
नवयुग गूँथ रहा जयमाला!!

दुख के शूल मुड़ मन आये,
नव रचना के सूत्र सजाये!
नव-नव वर्ष सुमन बन उसमें,
भर जाता शृङ्गार निराला!
नवयुग गूँथ रहा जयमाला!

[गीत गाये जाने पर एक निमिष दोनों उदास-सी रहती है]

छाया—परन्तु जब तक हमारे असंख्य भाई-बहिनों की आँखों के आँसू उनके होठों की हँसी नहीं बन जाते, जब तक माता पिताओं से उनके बच्चे नहीं मिल जाते, भाइयों से उनकी बहिनें नहीं मिल जातीं, तब तक यह जयमाला किस काम आयेगी? आज हमारे सारे आनन्द और उल्लास के गीतों में यही व्यथा की रागिनी बज रही है।

उमा—व्यथा की रागिनी न हो तो मनुष्य अपना धर्म अपना कर्त्तव्य न भूल जाये? आज का नवयुग तो कर्त्तव्य का संदेश लाया है, अधिकार का उपहार नहीं!

श्यामा—ठीक कहा तुमने उमा! कर्त्तव्य एक अमृत है जिसे पीकर मनुष्य जागृत और अमर होता है—कर्त्तव्य की चेतना के बिना अधिकार का भोग भी हलाहल है।

छाया—परन्तु हमारी स्वतन्त्रता के साथ अधिकार का आनन्द इतना आया ही कहाँ, जितना संकटों और विपत्तियों का शोक—आज की घटनायें इसकी साक्षी हैं

श्यामा—बिना संकट को सहे सुख का आनन्द अधूरा हो जाता है, जानती हो छाया!

उमा—पर यह संकट आये बिना भी तो हमें आनन्द की प्राप्ति हो सकती है—आज हमारे लाखों पीड़ित भाई-बहिन अपने ही देश में शरणार्थी बन कर भिखारी हो गये हैं—क्या कहूँ उनकी करुण कथा—हरे भरे खेत खलिहानों और हँसते गाते घर आँगनों को छोड़-छोड़ करके वे अपने प्राण लेकर भागे और ....
(गला भर आता है)।

छाया—और आज उनका कोई सहारा नहीं—अनाथ की तरह वे दिन भर भटकते हैं; रात में धरती को बिछा लेते हैं—और आकाश

को ओढ लेते हैं। आज के हमारे गानों में उनकी आहों की साँस मिली रहती है, हमारी सुरीलीतानों में उनकी सिसकियों का स्वर घुला रहता है।

उमा—और पुरुष से भी अधिक दुर्दिन देखा है नारी ने। नारी पर पिछले दिनों जो अमानुषिक अत्याचार किये गये, वे तो दानवों को भी शरमाने वाले हैं। आह नारी! तेरे सतीत्व पर गर्व करने वाला पुरुष आज अपनी ही लज्जा में उड़ा जारहा है।

[नैपथ्य में गाना (सन्तोष बाला का)]

यदि झेल सको तुम शूलों को तो कल फूलों से खेल सकोगे।

उमा—वह देखो सन्तोष बाला क्या गा रही है।

[सन्तोष बाला का गाते-गाते प्रवेश]

यदि घूँट ले सका विषका, तो कण्ठों में सुधा उँडेल सकोगे ?

श्यामा—आओ, संतोष बाला बहिन! आज पहिली बार तुम्हारे कंठ से संतोष और साहस, उत्साह और आनन्द का स्वर सुन रही हूँ। यह परिवर्तन कैसे ?

संतोष—उदासी और निराशा कभी स्थायी नहीं होती न—सच पूछो तो पिछला संकट ही हमें जीवन का मंत्र दे गया है—बहिन! और नये वर्ष का नया दिन तो प्राणों में आशा का संदेश फूंक रहा है!

उमा—हाँ संहार में ही तो सृष्टि का बीज है—विध्वंस में ही तो निर्माण का संदेश होता है, संतोष बहिन!

संतोष—परन्तु यह नारी का ही अपराध था बहिन! कि उसने अपना विनाश बुलाया। उसने स्वयं अपनी शक्ति नहीं पहिचानी थी, क्यों श्यामा दीदी।

श्यामा—यह नारी का नहीं उसके प्रशंसक पुरुष का अपराध था, संतोष बहिन! पुरुषों ने हमें फूलों से सजा कर हमें गुलदस्ता बना दिया था—जिससे हमने आग की लपटों से खेलना नहीं सीख पाया। पुरुष जो सती-सती कह कर स्त्री की पूजा करता रहा; स्त्री को स्वयं न बचा सका।

संतोष—तभी तो अब स्त्री को स्वयं अपना स्वरूप जानना है; उसे अपनी शक्ति को पहिचानना और पाना है—नारी को अब पुरुष का खिलौना नहीं बनना है; उसे अनुगामी नहीं अग्रगामिनी बनना है।

उमा—सच बात है! नारी का धर्म अलङ्कार और शृङ्गार ही नहीं है; उसे गृह की लक्ष्मी और परिवार की शोभा ही नहीं बने रहना है। इसका परिणाम देख लिया। उसे अब समाज और राज्य को संजीवनी और शक्तिनी बनना है।

संतोष—सचमुच, इतिहास की घटनाओं से आज की नारी आँखें बन्द करके नहीं रह सकेंगी।

श्यामा—नवयुग की नारी को कोमलांगिनी नहीं वज्राङ्गिनी बनना है। उसे अब अबला कहलाने में नहीं सबला बनने में गर्व अनुभव करना होगा।

संतोष—ठीक कहती हो।

श्यामा—नारी घर के स्निग्ध वातावरण में सौंदर्य और स्नेह, कोमलता और मधुरता की प्रतिमा होगी। परन्तु अत्याचार और अनाचार की आँधी में वह चट्टान की तरह अडिग अन्याय के अँधेरे में बिजली की तरह चमकने वाली होगी। उसके एक हाथ में भले ही फूल की माला हो, वीणा हो, रस का प्याला भी हो, पर दूसरे हाथ में त्रिशूल अवश्य होना चाहिए।

उमा—तो उसे मदिरा का कलश लेकर थिरकने वाली मोहिनी नहीं महिष-मर्दिनी दुर्गा बनना है। चण्डी बने बिना आज की नारी का निस्तार नहीं है संतोष बहिन !

संतोष—मैं समझ गई हूँ बहिन ! नारी को अब फूलों की—माला नहीं गूँथनी है; उसे क्रांति की चिनगारी जगानी है, और प्रगति की मशाल बन कर चलना है। नवीनयुग की नारी को पुरुष के कंधे से कन्धा मिला कर उसके साथ प्रगति की ओर कदम बढ़ाना है। पीछे चलने में उसका कल्याण नहीं है।

उमा—भारत राष्ट्र की नारी ने पुरुष के साथ प्राचीन के विनाश में हाथ बँटाया है; अब उसे नवीन के निर्माण की शक्ति पुरुष को देनी है।

श्यामा—हाँ, नारी जननी है उसमें सृष्टि और निर्माण के बीज अधिक चेतन हैं।

छाया—आज से हम नारियाँ एक नया इतिहास लिखें—जिसकी स्याही में आँखों का काजल न हो, सागर की गहराई हो, जिसके अक्षरों में अलंकार की शोभा न हो, अग्नि का तेज हो; जिसके पन्ने पन्ने में बीते हुए दिनों की दुखभरी याद न हो आने वाले दिनों के उत्कर्ष और उत्थान का संगीत गूँजता हो। जानती हो बहिन, एक युग पहिले राष्ट्र कवि ने लिखा था—

अबला ! जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी ॥

परन्तु नवयुग के कवि ने गाया है:—

[छाया और श्याम का समवेत गान]

नई आज नारी लिखेगी कहानी।
रहेगा भरा आँख में अब न पानी !

रहे साथ वीणा, रहे साथ माला !
रहेगी चषक में सुधा ही, न हाला !
रहेगी नहीं फूल की वल्लरी ही !
रहेगी सदा हाथ में अब कृपाणी !
नई आज नारी लिखेगी कहानी !

नहीं अंग के फूल शृङ्गार होंगे,
भरे रोम में लाल अँगार होंगे !
बनेगी मयन में लपट वज्र कर में—
कि गर्जन गिरा में हृदय की हिमानी !
नई आज नारी लिखेगी कहानी !

रहेगी न अब वह बनी रूप रेखा—
बनेगी नई शान्ति की क्रान्ति लेखा !
बनेगी नये विश्व की रूप-रचना
उसी के चरण की प्रगति की निशानी ।
नई आज नारी लिखेगी कहानी !

उठे आज निर्माण-दीपक सजायें—
बनेगी अमर क्रान्ति की लौ जगाये ।
रहेगी सबल संगिनी ही पुरुष की,
रहेगी न दासी, रहेगी न रानी !
नई आज नारी लिखेगी कहानी !

(पटाक्षेप)

संगम

रचनाकाल :—

[स्वतन्त्रता दिवस, १९४५]

पात्र परिचय

रामानन्द	:	प्रसिद्ध मध्ययुगीन वैष्णव धर्माचार्य
कबीर	:	प्रसिद्ध मध्ययुगीन सन्तकवि, रामानंद के शिष्य
रैदास	:	प्रसिद्ध मध्ययुगीन सन्तकवि, रामानंद के शिष्य
धन्ना जाट	:	रामानंद के शिष्य
प्रतापसिंह (पीपा भगत)	:	रामानंद के शिष्य
सेना नाई	:	पीपा भगत का सेवक

अभिनय भूमिका

यह एकांकीरूपक स्वतन्त्रता दिवस १९४५ वनस्थली विद्यापीठ की छात्राओं द्वारा शान्ता-सदन में अभिनीत किया गया था।

अभिनय-भूमिका इस प्रकार थी :—

रामानन्द	—	कुमारी महादेवी
कबीर	—	
रैदास	—	कुमारी शान्ति कबाड़ी
धन्ना जाट	—	कुमारी सुवीरा
प्रतापसिंह	—	कुमारी शकुन्तला द्विवेदी

पहला अंक

स्थान : रामानन्द स्वामी का मठ, काशी

[मठ अष्टकोणाकार आठ खम्भों पर स्थित एक मण्डपाकार भवन है। ऊपर की ओर गुम्बद एक विंदु पर जाकर मिल गया है। भीतर की ओर भित्तियों पर चित्र उत्कीर्ण हैं। खम्भों पर कमल और प्रसून के चित्र उत्कीर्ण हैं।]

भक्त कबीर, धन्ना जाट, रैदास चमार, वैष्णव धर्माचार्य भगवान् रामानन्द के दोनों ओर बैठे हैं। एक ओर राजसी वेष पहिने गागरोन गढ़ (कोटा राज्य) के अधिपति भी हैं।

करताल और मंजीरों के बीच कीर्तन होरहा है।

कीर्तन

राम रामेति रामेति राम रामे मनोरमे।
सहस्र नाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने॥

[कीर्तन बन्द हो जाता है।]

रामानन्द

कितने आनन्द का अवसर है आज! गुरु राघवानंद के मठ को छोड़ते समय जो संकल्प लेकर चला था, उसे आज पूर्ण होते हुए देख रहा हूँ। द्रविड़ देश की कुमारी, यह भगवद्भक्ति आज उत्तरा पथ की सम्राज्ञी हो गई है, क्यों कबीर!

कबीर

शंकर का अद्वैतवाद—"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या" का माया वाद आज आपकी राम-भक्ति की गंगा में डूब गया है, गुरुदेव !

हमरा भरमु गवा भउ भागा ।
जब राम नाम चित लागा ॥

रामानन्द

भगवान् रामानुजाचार्य की आत्मा भी भगवद्भक्ति की इस गंगा को प्रवाहित होते देखकर कितनी तृप्त हो रही होगी कबीर ! गुरु राघवानन्द के आशीर्वाद से ही 'राम' का सन्देश मैं घर घर में पहुँचा सका हूँ, क्यों रैदास ?

रैदास

गुरुदेव मैं तो जब देखता हूँ कि समस्त आर्यावर्त आज भगवान् के प्रेमानन्द में मग्न हो रहा है तो सारे दुःख द्वन्द्व को भूल जाता हूँ। प्रभु ! समस्त उत्तराखंड के नर नारी भगवान् के दर्शन के लिए आतुर देखकर मेरे मानस में सागर की लहरें तरंगित होने लगती हैं। भगवन् ! राज-मन्दिरों से लेकर घास फूस की कुटियों तक आपने राम-भक्ति का गीत गुँजा दिया है। अटक से लेकर कटक तक आज राम के नाम का साम्राज्य फैल गया है।

रामानन्द

राम ! राम !! राम ! राम !!

सबै भूमि है राम की तामें अटक कहा ?
जाके मन में अटक है सो ही अटक रहा ?

कबीर

धन्य है प्रभू ! तभी तो गागरोन गढ़ के राजा प्रतापसिंह आज उस राम नाम के राज्य में अपने राज को मिलाने के लिये यहाँ आये हैं। इससे बढ़कर भगवान् आपकी विजय और क्या होगी ?

रैदास

महाराज ! क्या प्रतापसिंह को श्रीचरणों की सेवा और 'राम' नाम का मंत्र दीजिये।

राजा प्रतापसिंह

(स्वामी रामानन्द के चरणों में प्रणाम कर) यह तुच्छ सेवक भगवान् रामानन्द के कमलों में अपना राज-मुकुट रखकर प्रणाम करता है। राज सिंहासन में वह परमानन्द कहाँ जो आज रामानन्द के चरणों में है ?

(स्वामी रामानन्द आशीर्वाद का हाथ देते हैं ।)

रैदास

तुम धन्य हो राजा प्रतापसिंह !

प्रतापसिंह

अब राजा नहीं हूँ भगत ! अब तो मैं रामानन्द महाराज के दरबार में एक चाकर हूँ।

रामानन्द

इस दरबार में राम को छोड़ और कोई राजा नहीं। आज से तुम पीपा भगत हुए राजा प्रतापसिंह !

पीपा

महाराज ! मेरे साथ आया हुआ एक युवक सेना भी श्री चरणों का स्पर्श पाना चाहता है। परन्तु वह तो नाई है महाराज ! यदि चरण स्पर्श न पा सके तो दूर से ही दर्शन का अवसर दें। बाहर ही ठहरा है।

रैदास

रामानन्द भगवान् के यहाँ कोई छोटा बड़ा नहीं है पीपा भगत ! यहाँ तो प्रताप राजा भी पीपा भगत बनकर सेना भगत के साथ बैठकर भगवान् के प्रेमामृत का पान कर सकता है।

कबीर

देखते हो (धन्ना भगत की ओर इंगित करके) वे धन्ना भगत जाट हैं।

धन्ना

हाँ, पीपा भगत !

कबीर

और जानते हो मैं कौन हूँ ?

तनना बुनना तज्या कबीर।
राम नाम लिखि लिया सरीर।
जाति जुलाहा मति को धीर।
हरपि हरपि गुन रमै कबीर।

रैदास

और पीपा भगत ! जानते हो मैं कौन हूं ? मैं वह हूं जिसकी छाया तक से तिलकधारियों को छूत लग जाती है।

जाति भी ओछी करम भी ओछा
ओछा कसब हमारा।
नीचे से प्रभु ऊंच कियो है
कह रैदास चमारा

कबीर

चमड़े के टुकड़ों को राम नाम के धागों से जोड़कर देह पर धारण करने योग्य तो बनाते हो तुम रैदास !

धन्ना

भगवान् रामानन्द के चरणामृत का पान करके तो अपवित्र भी पवित्र बन जाता है पीपा भगत !

रामानन्द

इन सबने सच कहा पीपा ! राम का दरबार तो सबके लिए खुला है बन्धन नहीं।

जाति पाँति पूछै नहिं कोई
हरि को भजै सो हरि का होई

आज तो धन्ना चाहे जाट हो तो भी भगत हैं, सेना नाई तो भी भगत हैं कबीर मुसुलमान हों तो भी भगत हैं, रैदास चमार हों तो भी भगत हैं और पीपा राजपुत्र हैं तो भी भगत हैं। यहाँ सब एक हैं। रामानन्द का यही सन्देश है। भगवान् रामानुज ने जो नहीं किया वह आज मैं कर रहा हूँ। मेरा यह सन्देश तुम आज घर घर पहुँचा दो। हिंदू और मुसलमान कबीर के शब्दों में दो आँखें हैं—दो आँखें भगवान् का रूप तो अलग अलग नहीं देख सकतीं और हिन्दुओ! यह ऊंच-नीच का भेद यदि राम का नाम भी न मिटा सके तो फिर वह न मिटेगा। मुसलमानों के खुदा के दरबार में भी तो सब एक हैं और राम और खुदा तो एक ही है। नाम के भेद के पीछे लड़ लड़ कर मरते हैं। कबीर, तुम गाओ तो अपना वह पद-सन्तो, देखत जग बौराना!

[कबीर पद गाते हैं]—

सन्तो देखत जग बौराना।
साँच कहौ तौ मारन धावै, झूठे जग पतियाना।
हिंदु कहै मोहि राम पियारा, तुरुक कहै रहमाना।
आपस में दोउ लरि लरि मूये, मरम न काहू जाना।
कहत कबीर सुनो हो सन्तो, ई सब मरम भुलाना।
कैतिक कहौ कहा नहिं मानै, आपुहि आप समाना।

लघुयवनिका गिरती है—

रेवा का राज मुकुट

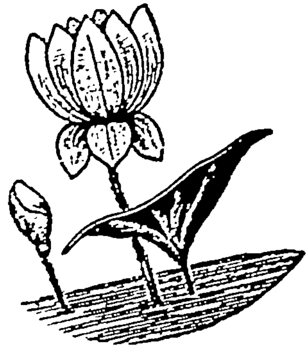
रचनाकाल :—

[वसंत २००२ वि० : १६४६ ई०]

पात्र-परिचय

विक्रम देव	:	रेवा राज्य के अधिपति (महाराज)
पराक्रम देव	:	महाराज विक्रमदेव के कुमार (युवराज)
वसुकर्मा	:	सम्राट के राजकीय प्रतिनिधि (राजदूत)
इन्द्रगुप्त	:	रेवा राज्य परिषद् के प्रधान अमात्य
सुबन्धु शर्मा	:	रेवा के राज्य पुरोहित
प्रजा नायक	:	प्रजा के एक नेता

नर्तकियां, प्रजागण, पार्षद सभासद आदि।



प्रथम दृश्य

स्थान : रेवा का राज-परिषद्-गृह :: समय : अपराह्न

[परिषद-गृह एक विशाल भवन है जो चौबीस मर्मर-स्तम्भों पर स्थित है। स्तम्भ अष्ट कोणाकार हैं जिन पर अजंताशैली की मूर्तियाँ खुदी हुई हैं। जहां स्तम्भों के शिखर छत से मिलते हैं वहां पद्माकार हो गये हैं। चारों ओर की दीवारों पर इन्द्रधनुषी पृष्ठभूमि पर दसों अवतारों के चित्र हैं। दीवारों के सामने की दीवार को छोड़कर सब में बड़े बड़े द्वार हैं। छत में नौ खण्ड किये गये हैं, प्रत्येक के केन्द्र में एक एक फानूस का झाड़ लटक रहा है।

सामने दीवार के सहारे रंगमंच के ऊपर तीन सिंहासन हैं। बीच का सिंहासन स्वर्ण का है जो तीनों से बड़ा है। दाईं और बाईं ओर के सिंहासन चाँदी के हैं जिनमें हाथीदांत की जड़ाई है। सिंहासनों के नीचे आकार के अनुरूप पादपीठ हैं। सिंहासनों के आगे बीचों बीच एक कमलाकार दीप स्तम्भ है जिसमें धूप जल रही है। मंच की सीढ़ियों के नीचे एक कुण्डलाकार छोटा मंच और है जो नृत्य वृत्त कहलाता है। नृत्य-वृत्त के दोनों ओर गोलाकर कुर्सीनुमा ऊँची ऊँची चौकियाँ हैं, जिनपर पार्षद बैठते हैं। नृत्य-वृत्त के मुख्य द्वार तक चौड़ा मार्ग है जिस पर नीले रंग का वस्त्र बिछाया गया है। शेष भाग में दोनों ओर वृत्ताकार चौकियाँ हैं जिनके मुख मंच की ओर हैं। इन चौकियों पर अनेक सभासद् बैठे हुये हैं।

[२]

नेपथ्य में 'महाराज रेवाधिपति की जय' की ध्वनि के उपरान्त आगे आगे विक्रम देव और वसुकर्मा और उसके पीछे, पराक्रम देव आते हैं, पीछे अनेक पार्षद हैं।

रेवाधिपति की अवस्था पैंतालीस वर्ष के लगभग है। गौर वर्ण, विशाल काय और हृष्ट पुष्ट। ललाट पर केशर तिलक है, बाल पीछे लहराते हैं। हरे रंग का अधोवस्त्र (धोती) और केशरी रंग का कौशेय उत्तरीय है। उत्तरीय पर सुनहरा काम हो रहा है। सिर पर स्वर्ण जड़ित मुकुट, गले में वक्षस्थल पर लटकता हुआ रत्नहार, भुजाओं में केयूर और वलय हैं। और अँगुलियो में मुद्रायें हैं। कटिबन्ध में मखमली कोष वाली कृपाणी बाईं ओर लटकती है। पैरों में स्वर्ण मृग चर्म के पदत्राण हैं।

युवराज पराक्रमदेव २५ वर्ष के युवक हैं जिनके मुख पर युवकोचित आया है। रंगरूप पिता के अनुरूप है मुकुट पिता से छोटा है। वसुवर्मा (साम्राट के राज्य दूत) की वेषभूषा भी राजसी है केवल उनका शरीर कृष्ण वर्ण और दीर्घ है। उनका उत्तरीय नील कौशेय का है और अधोवस्थ पीत। उनके दायें हाथ में एक राजाज्ञा है।

तीनों के मंच पर आते ही सभागण उठते हैं। पार्षद गण मंच की सीढ़ियों से उतर कर अपने स्थानों पर आकर बैठते हैं पार्षदों की वेशभूषायें क्षत्रियों और ब्राह्मणों की सी हैं। ब्राह्मणों के शरीर पर श्वेत चंदन बिन्दु, श्वेत अधोवस्त्र और पीत उत्तरीय है।

[नर्तकियों का नृत्य]

विक्रम देव—महाराजाधिराज परमेश्वर परम भट्टारक श्री सुदर्शन देव की ओर से राजमान्य राजदूत महोदय श्री वसुवर्मा 'राज्यादेश' सुनायेंगे।

वसु वर्मा—(राज्यादेश हाथ में लिये खड़े होकर) महाराज, इस नृत्योत्सव के उपरान्त मैं जो राज्यादेश सुनाने वाला हूँ वह इस सभा को मेघों की घटा की भांति छालेगा फिर भी .. .. (पढ़कर) आर्य्यावर्त के साम्राट ईश्वर के प्रतिरूप और प्रतिनिधि हैं। उनका राजदण्ड ईश्वर का राजदण्ड है जिससे वह ईश्वर की इच्छापूर्त्ति के लिये अपने आसमुद्र क्षितिश साम्राज्य का शासक और लक्ष-कोटि प्रजा का अनुशासन करते हैं।

रेवा के महासामन्त महाराज विक्रमदेव ने परम दैवत से आदेश प्राप्त किये बिना ही अपनी प्रजा को—जो सम्राट की प्रजा का एक अंश है—शासनाधिकार देकर साम्राट के विरुद्ध विद्रोह किया है।

[सब पार्षदों में क्षुब्धता और सभासदों में विकलता दिखाई देती है।]

रेवा सिंहासन परम भट्टारक महाराजाधिराज श्री सुदर्शनदेव के सिंहासन का अंश है। रेवा महाराज की स्वाधिकृत सम्पत्ति नहीं। उसको परम दैवत से छीनकर प्रजा को देकर वे उसके गौरव का लोप नहीं कर सकते। रेवा का राज मुकुट किसी व्यक्ति का राज मुकुट नहीं, वह ईश्वर-विग्रह साम्राट के राज मुकुट का प्रतिनिधि है; उसे अपने सिर से उतार कर प्रजा को देना साम्राट का अपमान है। ऐसे अपराध पर साम्राट को—ईश्वर इच्छा से—अपना राज दण्ड उठाना पड़ता है। रेवा के मुकुटधारी महाराज विक्रमदेव को इस अपराध पर सिंहासन-च्युत किया जाकर उसके स्थान पर युवराज पराक्रम देव को रेवा का मुकुटधारी घोषित किया जाता है।

[पार्षदों और सभासदों में क्षुब्धता और विकलता की वृद्धि]

इसी वसंतोत्सव पर यह राज्यारोहण समारोह हो। राजदूत राज प्रतिनिधि श्री वसुवर्मा को इस राज्यादेश द्वारा यह अधिकार है कि वे इस राजाज्ञा के पालन में विघ्न आने पर दिवत्रया, चक्रपुरी, त्रिविक्रम गढ़ के राज्यों की सेना माँग कर कार्य सम्पादन करें।

[राजदूत अपने स्थान पर बैठ जाता है।]

राजपुरोहित सुबन्धु शर्मा—(खड़े होकर)

राज प्रजा का होता है। राजा का उत्तरदायित्व साम्राट से भी पहले अपनी प्रजा के प्रति है। उन्हें अधिकार है कि वे अपनी प्रजा की थाती का चिरकाल तक उपभोग करने के अनधिकार के पश्चात पुनः प्रजा को लौटा दें। उन्होंने धर्म विरुद्ध कोई कार्य नहीं किया। कौटिल्य ने कहा है—जहाँ आचार और धर्म का विरोध हो वहाँ आचार का पालन करना चाहिए। जनता की वाणी जनार्दन की वाणी है।

अमात्य इन्द्रगुप्त—(खड़े होकर) आर्य सुबन्धु शर्मा ने जो कुछ कहा है वह प्रजा के ही कंठों की भाषा है। राजा प्रजा का पिता होता है और राजा के मंत्री प्रजा के प्रतिनिधि हैं। मैं अपनी प्रजा की स्वीकृति से ही रेवा राज्य परिषद् का सचिव हूँ। मेरे साथ इस राज्य के बलाधिकृत माहाश्वपति, रण-भाण्डागाराधिकर्त्ता, संधि विग्रहिक, अक्ष पटलिक, दण्डाधि-पति भी प्रजा द्वारा स्वीकृत हैं। मैं उन सबके कण्ठों से बोल रहा हूँ।

प्रजानायक—(खड़े होकर) इस राज परिषद् के प्रधान आमात्य राजमंत्री होकर भी प्रजा के विश्वसनीय मित्र हैं। मैं प्रजा की ओर से उनके कथन का साक्ष्य देना चाहता हूं। इन्हीं राज पुरोहित महोदय की सम्मति से महाराज ने प्रजा की धरोहर प्रजा को लौटाई है। परम भट्टारक राजाधिराज के प्रति विद्रोह की इसमें कोई गंध नहीं हो सकती।

राजदूत—यह आपका अन्तरिक प्रश्न है। राजदूत महाराजाधिराज परम महारक की आज्ञा को ही परमेश्वर की आज्ञा मानता है। क्यों आर्य सुबन्धु क्या मनु महाराज का यह कथन नहीं है कि:—

बालोऽपि नावमन्तव्यो मनुष्य इति भूमिपः
महती देवता ह्येषा नर रूपेण तिष्ठति

राजपुरोहित—यह भी ठीक है महाराज, किन्तु राज धर्म इतना निरंकुश न होना चाहिये कि प्रजा की सन्तति का पीड़न हो। स्मृतियाँ तो आचार के सामने पुरानी पड़ती जाती हैं। नई परम्पराओं और परिपाटियों के प्रकाश में पुराने अन्धकारमय बन्धन तोड़ने पड़ते हैं। आने वाले युग में राजा का नहीं, प्रजा का ही शासन होगा। उस युग की आशा किरण को मैंने पहिचाना था क्योंकि मैं जानता था—

बहूना मैकमत्यं हि नृपतेर्बल वन्तरम्
बहु सूत्र कृतो रज्जुः सिंहाद्याकर्षण क्षमः

राजदूत—परन्तु आर्य पुरोहित! आपने जो यह भयङ्कर यज्ञ रचाया है उसी की ज्वाला की लपटों में अपने होता को जलता देखिये।

विक्रमदेव—(खड़े होकर) मुझे कुछ कहना है। मैं और सब अपराधों का दण्ड स्वीकार करने को प्रस्तुत हूँ। परन्तु परम महारक परम दैवत के विरुद्ध विद्रोह का दुर्वह भार मैं नहीं उठा सकता। मेरी प्रजा ने राजाधिराज के प्रति कोई विद्रोह का झण्डा नहीं उठाया। राजाधिराज के प्रति निकटतर उत्तर-दायित्व मेरा है, मेरे राज्य ने साम्राज्य से कब विद्रोह किया? मेरे राज्य ने कौनसी राजाज्ञा शिरोधार्य नहीं की कब साम्राट के दिग्विजय में आनन्द नहीं मनाया, कब उनके युद्ध-अभि-यानों में सेना नहीं भेजी और उनको राज कर नहीं दिया, कब रेवा को आर्यावर्त्त का अंग नहीं माना? मैंने अपने

अमर्यादित अधिकारों को जो मुझे अपनी प्रजा से मिले थे उसी को लौटाया मात्र है। मैंने अपनी संस्कृति के विरुद्ध कोई कृत्य नहीं किया, परन्तु परम दैवत की आज्ञा से मैं वैधानिक नियमों के आगे सिर झुका कर शिरोधार्य करूंगा। प्रजा नायक से मेरा निवेदन है कि वे प्रजा तक मेरी यह हार्दिक वेदना पहुँचा दें कि मैं उनकी सेवा न कर सका। मैं सहर्ष राज पद से उतर कर उनके बीच रहकर अपने राजसी पाप का प्रक्षालन करूंगा।

[सभासदों द्वारा—"महाराज विक्रमदेव की जय का घोष"]

—लघुजवनिका-पतन—

दूसरा दृश्य

स्थान—राजपथ :: **समय : सन्ध्या (उसी दिन)**

[राजपथ पर कई नागरिक झुण्ड बनाकर खड़े हैं। सबके आगे एक वृद्ध नागरिक है जिसका उत्तरीय आकाशी रंग का है और अधोवस्त्र श्वेत। शिर पर उष्णीश और तिलक। लम्बी दाढ़ी। नागरिक "महाराज विक्रम देव की जय !" "महाराज विक्रमदेव की जय !" का घोष करते हैं। थोड़ी देर मौन के पश्चात् झुण्ड में दुन्दुभि-घोष होता है]

वृद्ध नागरिक (ऊपर देखकर) महाराज, रेवा की प्रजा सम्राट की इस आज्ञा का विरोध करेगी। वह महाराज का दर्शन चाहती है।

[फिर "महाराज विक्रम देव की जय !" का अनेक बार घोष। ऊपर राजमहल का झरोखा है, जिसमें महाराज विक्रम देव दिखाई देते हैं। जनता में पुनः जय-घोष]

विक्रम देव—आप लोग दुखी न हों। अब मैं नहीं कुमार पराक्रम देव आपके राजा हैं। मुझे अपने सिंहासन से अधिक आपके उचित अधिकारों के छिन जाने का क्षोभ है। अपने हाथों लगाये अँकुर को मैं वृक्षरूप में बदलते न देख सका; परन्तु मेरे अन्तःकरण की वाणी है कि एक दिन आपकी ही विजय होगी और सम्राट की सुबुद्धि जाग्रत होगी। (जनता द्वारा

जयघोष) आज जनता के महा समुद्र में जो जुद्र तरंग उठी है वह उसके गर्भ में घुमड़ते हुये उद्वेलन का संकेत है। यह लहर इसी अपनी छोटी सी सीमा में बंधी नहीं रह सकती। आज नहीं तो कल, हम राजाओं और राजाधिराजाओं को यह सत्य स्वीकार करना पड़ेगा कि वे प्रजा के स्वामी नहीं सेवक हैं।

(जनता में करतल ध्वनि)

एक दिन राजाओं को प्रजा की थाती, जनता की धरोहर, जिसे वे अपनी पैतृक निधि मानने की भूल कर रहे हैं, लौटा देनी होगी।

द्ध नागरिक——परन्तु महाराज सोने और चाँदी के सिंहासन से उतर कर ही आप हमारे राजा न रहने से नहीं बच सकते। आप हमारे हृदयों के राजा हैं। यह सिंहासन उस सिंहासन से अधिक स्थाई है महाराज! परन्तु अब क्या हमें आपके पुत्र कुमार पराक्रम देव के विरुद्ध विद्रोह करना होगा?

क्रम देव—मुझे कुमार से मिलने नहीं दिया गया है। मैं सिंहासन से उतरते ही अपने प्रासाद के कक्ष में बन्दी बन गया हूँ। आज मेरे स्थान में आपके राजा पराक्रम देव हैं। आप उन्हें आशीर्वाद दें कि उनके हृदय में आलोक की रेखा चमके और वे अपना धर्म मार्ग पहिचानें। मुझे कुमार की सहृदयता में विश्वास है, परन्तु पृथ्वी का लोभ, स्वर्ण का मोह और राज का मद प्रबल होता है। आप यद्यपि सम्राट की इस आज्ञा का विरोध करने में स्वतंत्र और समर्थ हैं, परन्तु कल तक आप लोग ठहरें आपकी जाग्रत इच्छा को कोई बाह्य शक्ति पद दलित नहीं कर सकती।

[जनता में—"महाराज की जय! रेवा राज्य की जय! रेवा प्रजा की जय!" के घोष]

इस जय के नारों को सच्चा करने के लिये आपको राज सभा में जाना चाहिये। मैं आप लोगों से प्रार्थना करता हूँ कि आप अपनी भूमि पर होने वाले इस परिवर्तन की प्रतिक्रिया के साक्षी बनें। समारोह की वेला निकट आरही है आप इसमें उपस्थित हों।

[रेवा—जनता की जय ! के अनेक घोषों के साथ
झुण्ड का प्रस्थान]

—लघु-जवनिका-पतन—

तीसरा दृश्य

स्थान : रेवा का राज परिषद् : ; समय : रात्रि

['राज परिषद् ग्रह' शशिरश्मि ज्योतिर्मय दीपों से जग मगा उठा है। मुख्य सिंहासन पर विक्रमदेव का चित्र और सामने राजमुकुट रक्खा है। दाईं ओर के सिंहासन पर पराक्रमदेव और बाँईं ओर राजदूत स्थित हैं। वातावरण में खिन्नता और अवसाद है। परिषद् में उपस्थिति क्षीण है।]

वसुवर्मा राजदूत—(उठकर) रेवा राज्य के परिषदो ! परिषद् की क्षीण उपस्थिति देखकर मुझे कोई विस्मय नहीं है। महाराज विक्रमदेव अत्यन्त लोकप्रिय नरपति थे। किन्तु मैं परम महारक परम दैवत की आज्ञा का अनुचर होकर कठोर कर्त्तव्य करने आया हूँ। महाराज सभा में आने में असमर्थ हैं, इसीलिए उनका प्रतिनिधि यह चित्र है। वे यदि स्वयं अपने हाथों से यह राजमुकुट जो यहाँ रक्खा है कुमार पराक्रमदेव के मस्तक पर प्रतिष्ठित करते तो यह कटोर कार्य कोमल उत्सव में बदल जाता।

राज पुरोहित—(उठकर) परन्तु महाराज की अनुपस्थिति में यह मंगल समारोह स्थगित होना चाहिये।

वसुवर्मा—मंगल कार्य में विलम्ब स्वयं अमंगल है। राज पुरोहित ! आप इस दिन की खिन्नता के मेघों को उछाह के इन्द्र धनुष में बदल दें। गणिकायें आपके कण्ठों के विहाग को भैरवी बना देंगी।

[गणिकायें अत्यन्त करुण रागिनी में समवेत राग गाती हैं।]

वसुवर्मा—(उठकर) वसन्तोत्सव के दिन मैं, परमेश्वर परम भट्टारक सम्राट् का प्रतिनिधि, महाराज विक्रमदेव के कुमार पराक्रम देव को रेवा के सिंहासन पर प्रतिष्ठित करता हूँ।

[युवराज की ओर संकेत करते हैं, वे निकट आते हैं—महाराज की मूर्ति को उठाकर युवराज को देते हैं, युवराज उसे हृदय से लगा लेते हैं; फिर राजदूत मुकुट उठाते हैं और युवराज को मुख्य सिंहासन पर बैठने का संकेत करते हैं। युवराज उस पर बैठ जाते हैं।]

वसुवर्मा—और रेवा का राजमुकुट उन्हें पहनाता हूं। महाराज पराक्रम देव की जय ! [जय घोष नहीं होता। सभा में करतल ध्वनि न होने पर स्वयं करतल ध्वनि करते हैं।]

मैं आशा करता हूँ कि महाराज पराक्रम देव अपने पिता की कलंक-कालिमा को धोकर (महाराज सिहरते हैं) उज्ज्वल आदर्श स्थापित करें। राज पुरोहित महाराज का अभिषेक करें और उन्हें आशीर्वाद दें। (राजपुरोहित नहीं उठते)

[राजदूत स्वयं महाराज को तिलक लगाते हैं]

पराक्रम देव—(उठकर)

सम्राट की इस कृपा को मैं अपना घोर अपमान समझता हूँ। मेरे पितृदेव ने जो मंगल कार्य किया था वह उनकी कलंक कालिमा

नहीं थी, मेरे वंश की गौरव रेखा थी। मैं उसे मिटाकर अपने आपको कलंकित नहीं करूँगा। उसे और भी ज्योतिर्मय बनाऊँगा। (सिंहासन से उतर कर नीचे आते हैं)

(करतल ध्वनि)

मैं अपने पिता का पुत्र हूँ। मैं स्वयं उनके पदचिन्हों का अनुकरण करते हुये अपने पुत्र धर्म का पालन करूँगा। मैं यह राज सिंहासन अपने पिता के पद चिन्हों पर चलने वाले पावों से ठुकराता हूं।

[मुख्य द्वार से जनता का प्रवेश]

यह मुकुट मेरा गौरव मुकुट नहीं यह मेरे कुल का कलंक है। मैं इसे अपने गौरवमय मस्तक के अयोग्य समझता हूँ।

(मुकुट उतारकर फेंक देते हैं)

[जनता का जय घोष—
महाराज पराक्रम देव की जय !
रेवा प्रजा की जय !]

—जवनिका-पतन—

राम-रहमान

रचना काल:—

[वसन्त २००२ विक्रमी]

प्रकाशित:—

हिन्दुस्तान (दिल्ली) १०-२-४

पात्र परिचय

पुरुष

१. कैलाशनाथ—	रामचरण का पिता ...	...	४५ वर्ष
२. रामचरण—	'आजाद हिन्द फौज' का बन्दी सैनिक		२५ ,,
३. हरिचरण—	रामचरण का छोटा भाई	...	१४ ,,
	जलूस के व्यक्ति आदि		

स्त्री

१. परमेश्वरी—	कैलाशनाथ की पत्नी ...	...	४० ,,
२. वीणा—	कैलाशनाथ की पुत्री ...	...	१६ ,,
३. चन्द्रलेखा—	वीणा की सहेली (१) ..	...	१८ ,,
४. तारा—	,, (२)...	...	१६ ,,
५. नन्दिनी—	,, (३)...	...	१० ,,
६. करीमा—	एक मुसलमान लड़की	...	१३ ,,
	अन्य सहेलियां आदि		

❀ अभिनय भूमिका ❀

'बसन्तोत्सव (सं० २००२ वि०) पर यह एकांकी वनस्थली विद्यापीठ की छात्राओं द्वारा अभिनीत हुआ था।

अभिनय भूमिका इस प्रकार थी:—

कैलाशनाथ—	कुमारी मनोरमा (संस्कृता)
रामचरण—	,, सुवीरा बी. ए., (प्रथम वर्ष)
हरिचरण—	,, कमला बी. ए., ,,
परमेश्वरी—	श्रीमती साधना देवी (इण्टर मीजियट प्रथम वर्ष)
वीणा—	कुमारी शकुन्तला द्विवेदी (संस्कृता)
करीमा—	,, स्वतन्त्रता ,,
चन्द्रलेखा—	,, सुशीला (बी. ए. प्रथम वर्ष)
तारा—	,, कृष्णा निम्बावत (संस्कृता)
नन्दिनी—	,, कमला शर्मा (कक्षा ६)

निर्देशक:—प्रो० मिट्ठनलाल माथुर एम. ए.

श्री विद्या चतुर्वेदी एम. ए.

पहला दृश्य

स्थान : उपवन समय : प्रातःकाल

एक आरामकुर्सी पर कैलासनाथ

[कैलासनाथ समाचार पत्र पढ़ रहे हैं। परमेश्वरी पीछे आकर खड़ी होती है।]

परमेश्वरी

आज वसन्त है, उपवन में वल्लरियां, लता-वल्लरियों में कोकिलाएँ और कोकिलाओं के कण्ठ में संगीत की लहरियां नाच रही है। मेरे मन में भी कामनाओं का कुञ्ज लहलहा रहा है। परन्तु उसमें कूकनेवाली कोकिल नहीं है। आह, मेरा रामचरण, बचपन में अपनी मीठी बोली से मुसकान की कलियां खिला देता था। जाने किस पिंजड़े में होगा वह !

कैलासनाथ

सचमुच, आजाद हिन्द फौज के सब बन्दी एक-एक करके छूटते आ रहे हैं। न जाने रामचरण किस कारागार में होगा। पंजाब, युक्तप्रांत मध्यप्रान्त और बम्बई की सब जेलों में रामचरण नहीं है।

परमेश्वरी

न जाने क्यों मेरे हृदय मे उसके लौटने की आशा काले बादलों में बिजली की तरह चमक-चमक जाती है! वसन्त में जैसे कोकिल एक दिन आकर 'कुहू' से उपवन को गुँजा देती है, वैसे ही यदि मेरा रामचरण आ जाता—तो उसे अपने पिंजड़े मे बांध रखती।

[वीणा और हरि का प्रवेश]

(हाथ में तार देकर) वीणा—पिताजी! लीजिये भय्या आरहे हैं। यह तार है। पिताजी, वह तारवाला मिठाई भी मांग रहा है। कहता है—रामचरण भय्या आ रहे हैं।

[कैलासनाथ प्रसन्न होकर तार पढते हैं]

परमेश्वरी

सच? मेरा रामचरण आ जाए तो घर में गोविन्द भगवान के लिये मन्दिर बनवाऊँ। चार बरस हुए—इसी वसन्त के दिन मेरा राम लड़ाई पर गया था।

कैलासनाथ

लो, अब सब मङ्गल मनाओ। रामचरण आज ही दुपहर में लौट रहा है। तुम्हारी इच्छा पूरी हुई।

परमेश्वरी

मेरे गोविन्द भगवान ने मेरी विनती सुन ली। हरि बेटा, देखते क्या हो? भय्या के स्वागत का प्रबन्ध करो। वीणा, तू अच्छे अच्छे पकवान बना। आज घर में गान और नृत्य हो! (मेज़ की दराज़ में से पांच रुपये का नोट निकालकर वीणा को देकर) ले, तार वाले को यह इनाम दे आ। (वीणा जाती है)

हरिश्चरण

तो पिताजी, मैं जाऊँ स्टेशन। कांग्रेस के दफ्तर में भी खबर कर दूंगा (घड़ी की ओर देखकर) एक ही घण्टा और बचा है।

परमेश्वरी

हां बेटा, जल्दी जाओ और सीधे घर पर ही लाना उसे। मैं जाती हूं और तैयारी करूँ।

[सब जाते हैं; दूसरी ओर से वीणा का प्रवेश]

वीणा

ओह! कितने आनन्द का दिन है आज! हरि भय्या ने भाई के स्वागत के लिए जो गीत लिखा है, उसे तो गाऊँ।

(गाती है—)

स्वागत आज मनाऊँ!
मन नाचे, मैं गाऊँ!!
नाचे धरती, नभ मुस्काये
फूलों का आंचल भर लाये!
फूलें शशि-नक्षत्र गगन में
मैं उनको चुन लाऊँ।
स्वागत आज मनाऊँ!
मन नाचे, मैं गाऊँ!!

(२)

माता की पलकें हैं गीली,
छलके आज हँसी चमकीली
पांवों की कड़ियाँ जो काटें
उनको तिलक लगाऊँ
स्वागत आज मनाऊँ!
मन नाचे, मैं गाऊँ!!

(३)

मेरी जननी के सुत आओ,
माता को मुक्त बनाओ,
मैं पथ पर बिखरे फूलों को
छू—छू फूल बनाऊँ !

स्वागत आज मनाऊँ !
मन नाचे, मैं गाऊँ !!

[नेपथ्य में "वीणा ! वीणा !!" की ध्वनि]

वीणा

कौन ! (लड़कियों का प्रवेश) चंद्रलेखा ! तारा ! नंदिनी ! आओ ! आओ ! [लड़कियां इधर उधर खड़ी हो जाती हैं]

नन्दिनी

आज तो वसन्त है वीणा ! सारी वनस्थली आनन्द में नृत्य कर रही है । [नेपथ्य में कुहू कुहू की ध्वनि] वह देखो, कोयल भी स्वर में सङ्गीत भर कर कुहू कहने लगी है ।

चन्द्रलेखा

जब हृदय में आनन्द उत्पन्न होता है तब जानती हो क्या होता है ? वही आनंद आंखों मे स्नेह बन जाता है, पांवों में नृत्य बन जाता है और कण्ठ मे गीत ।

तारा

तभी तो आज वीणा का कण्ठ गीत से मुखरित हो उठा था । कितना सुन्दर गीत था वह ! उसकी स्वर लहरी कान में अभी तक गूँज रही है ।

वीणा

आज सचमुच वसन्त आया है तारा ! आज मेरे भैया न जाने कितने दिनों बाद घर लौट रहे हैं। आजाद हिन्द फौज के कई बन्दी आज जेलों से छूट छूट कर अपने अपने घर पहुँचे होंगे जैसे पिंजड़े से छूट कर कोयल।

तारा

अरी, कोयल नहीं, जैसे पिंजड़े से छूट कर सिंह।

चन्द्रलेखा

सचमुच इन सिंहों की गर्जना से आज ब्रिटिश सिंह का कलेजा दहला उठा है वीणा ! बड़ा भाग्यशाली है अपना नगर, जिसने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाला एक सैनिक दिया।

नन्दिनी

तभी तो आज नगर में स्वागत की हलचल हो रही है। क्या समारोह देखने न चलोगी ?

वीणा

चलेंगे, अवश्य चलेंगे। आज के दिन घर घर के आंगन में सच्चा वसन्त आया है। हम लोग भी वसन्त मनायें। आज नृत्य से घर का आंगन ही उपवन हो उठे। चलो, मिलकर गर्वा नृत्य करें।

दो-तीन

हां, हां, चलो।

(सब मिल कर गर्वा नृत्य करती हैं)

गान

सखि, वसन्त आया !

सूखे दल-प्रात चले,
अंकुर में, पल्लव में, नवयुग के रंग ढले !

कोकिल ने जीवन का गीत-गान गाया !
सखि, वसन्त आया !

(२)

शीत मिटा, कम्प गया
मन मन में भाव नया, कण-कण में प्राण नया !
रेख नवल, रूप नवल, रँग नवल लाता ;
सखि, वसन्त आया !

(३)

धरती है स्वर्ग बनी
गूँज उठी सपनों में जीवन की आ॰॰मनी !
रोग गया, शोक मिटा, हर्ष-लास छाता !
सखि, वसन्त आया !

(पर्दा गिरता है)

दूसरा दृश्य

कोठी के मुख्य द्वार के ऊपर झरोखा

[परमेश्वरी और कैलाशनाथ जो उत्सुक से जान पडते हैं एक ओर से प्रवेश करते हैं ।]

परमेश्वरी

पूरे चार बरस बाद मिलूंगी अपने बेटे से। वे लोग अभी तक नहीं आये ?

कैलाशनाथ

आते होंगे कभी-कभी गाड़ी देर से ही आती है ।

परमेश्वरी

परन्तु अब तक तो आ जाना चाहिये ।

[नेपथ्य में 'रामचरण की जय'
'आजाद हिन्द फौज जिन्दाबाद'
'जय हिन्द ! जय हिन्द !!
की ध्वनियां]

कैलाशनाथ

लो, वे लोग आ पहुँचे ! (कैलाशनाथ का एक ओर से प्रस्थान)

[परमेश्वरी उत्सुकता से वातायन से झांकती है]

परमेश्वरी

वह है मेरा लाल रामचरण ! (सहसा ठिठकती हुई) अरे यह लड़की कौन है ? पाजामा और ओढ़नी पहने । यह तो मुसलमान-सी लगती है । यह तो ऊपर ही आ रही है । (इधर उधर देखकर) अरी वीणा ! वीणा !!

वीणा—[नेपथ्य से] हां, मां, ! मैं थाली में रोली लिये आ रही हूँ ।

[वीणा प्रवेश करती है ! हाथ में थाली है]

[आगे आगे रामशरण और उसका हाथ पकड़े मुसलमान लड़की प्रवेश करते हैं । सामने से वीणा आकर 'भैया' कहकर रामचरण के थाल पर से तिलक लगाती है । रामचरण उसके सिर पर हाथ रखता है । वह सबसे पहले पिता के चरणों में सिर झुकाता है फिर माता की ओर बढ़ता है । परमेश्वरी उसे उठा कर गले से लगा लेतीं है ।

कैलाशनाथ

(करीमा की ओर देखकर) यह कौन है बेटा ?

रामचरण

यह दूसरी वीणा है पिताजी ! (करीमा से) आ करीमा ! जा पिताजी के पास जा । देख अपना घर है यह ।

[कैलाशनाथ 'आओ बेटी !' कहकर अपनी ओर बुलाते हैं । करीमा संकुचित होती है]

रामचरण

यह रहमान की बहन है पिताजी ! वह बचपन का मेरा साथी ! यहां से बिछुड़ा हुआ फौज में जाकर मिला । वह दिन जैसे कल ही

धीता हो। रहमान खन्दक में पड़ा पड़ा अपनी कराहों से आसमान को कँपाता रहा। उसके शरीर में घाव ही घाव हो गये थे और घावों से खून ही खून बह रहा था। कराहता कराहता लेटे लेटे मेरी गोद में सिर रक्खे बोला—तुम भाग्यवान हो भाई, जो मादरे वतन को आजाद देख लोगे। मैं आजाद हिन्द फ़ौज़ की फ़तहयाबी नहीं देख सका। मुल्क के आज़ाद होने के पहले ही जा रहा हूँ। ओह! अब न जाने कब मिलेंगे। नेता जी को मेरा सन्देश पहुँचा देना कि मैंने राष्ट्रीय झंडे के नीचे देश की आज़ादी के लिये हँसते हँसते जान दी। फिर बोला—राम भैया, एक प्रार्थना है। मेरी इकलौती बहन ही मेरी मां की धरोहर है, वह घर पर मेरी दिन रात खैर मनाती होगी। अब वह तुम्हारी बहन है राम, उसे अपनी बहन की तरह रखना। आह, मेरी करीमा! और फिर उसका शरीर (बोल नहीं सकता)

वीणा

तो भैया, इन्हीं रहमान भाई का समाचार छपा था पत्रों में! (करीमा के पास जाकर) तुम धन्य हो करीमा बहन! कि तुम्हारे भैया रहमान ने वतन के लिये अपनी जान तक कुरबान करदी! तुम एक बहादुर भाई की बहन हो!

(करीमा सिसकने लगती है)

रामचरण

(वीणा से) अब यह तुम्हारी छोटी बहन है वीणा! इसे बड़े प्यार से रखना! मैं सुदूर दक्षिण के जेल से छूट कर सब से पहले रहमान के घर गया था—जहां यह अकेली रहती थी। अब यह यहीं रहेगी।

[करीमा अपनी ओढ़नी के आंचल में मुंह छिपा कर रोने और सुबकियां लेने लगती है]

कैलाशनाथ

तुम रोती क्यों हो बेटी ! (करीमा के सिर पर हाथ रख कर) तुम्हारा रहमान कहीं नहीं गया है और चला भी गया हो तो भी तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए कि तुम्हें रहमान जैसा भाई मिला। तुम्हारा रहमान इतिहास में अमर होगया। जिसने देश के लिये लड़ते लड़ते प्राण दिये। ऐसे भाई संसार में बिरले ही मिलते हैं। चलो भाई, भीतर चलो, यहां कब तक खड़े रहेंगे।

(प्रस्थान)

लघुजवनिका-उत्थान

[भीतर बड़ा कमरा दिखाई देता है। एक सुन्दर कालीन कमरे में बिछा है। एक ओर पलंग का कुछ हिस्सा दिखाई देता है जिसके पास आराम कुर्सी है। एक कोने में सामने की ओर एक चौकी पर चांदी की थाली रक्खी है जो वस्त्र से ढकी है। पास में गिलास भी है। सब लोग जाकर बैठते हैं—कैलाशनाथ आराम कुर्सी पर और]

कैलाशनाथ

वीणा बेटी, ला तेरे भैया और करीमा को खिलायेगी नहीं कुछ ! (रामचरण से) लो बेटा, थोड़ा खा पी लो, तब और कुछ करना। (करीमा से) लो, खाओ बेटी ! (करीमा चुप है न हिलती है न डुलती है)

रामचरण

खाओ करीमा !

करीमा

ना, तुम खाओ रहमान भाई !

रामचरण

करीमा ! तू कब तक ऐसे ही रहेगी ! इतने दिनों से देख रहा हूँ, तू न खाती है, न पीती है। ऐसे कब तक चलेगा ? ले खा (हाथ से पेड़ा उठा कर करीमा के मुँह में देता है) तुझे खाना पड़ेगा (प्यार से चपत लगाकर) पगली कहीं की !

करीमा

(खा लेती है) तुम भी खाओ रहमान भाई ! [अपने हाथ से लड्डू उठाकर रामचरण को खिलाती है। सब लोग देख कर स्तब्ध से से रह जाते हैं। परमेश्वरी की दशा सब से अधिक लुब्ध सी है, वह हैरानी और परेशानी से यह सब देखती है।]

रामचरण

यह मुझे बड़ा प्यार करती है मां ! रहमान की जगह अब इसके लिए मैं ही हूँ। मेरे बिना कभी कुछ खाती पीती नहीं। (वीणा से) ले वीणा, तू भी तो खा। [पेड़ा उठा कर वीणा के मुंह में देना चाहता है। सहसा परमेश्वरी—"ना तू न खाना वीणा ! तूने अभी पूजा नहीं की है]

वीणा

ना भैया, तुम खाओ। मैं पूजा किये बिना न खाऊंगी।

रामचरण

अच्छा ! यह पूजा-पाठ कबसे करने लगी ? ले हरि तू तो खा ! कि तू भी पूजा पाठ करेगा ?

हरिचरण

मुझे अभी इच्छा नहीं है दादा, तुम खाओ न, तुम न जाने कब के भूखे होगे। तुम्हें अभी जुलूस में भी चलना होगा। सारी जनता दर्शन के लिये खड़ी है।

वीणा

मैं भी जाऊंगी पिताजी!

कैलाशनाथ

हां हरि ले जाना इसे भी।

रामचरण

अपने आजाद रेजिमैंट में पिताजी, हम लोग हिन्दू मुसलमान का कोई भेद नहीं रखते थे। सब अपने आप को हिन्दुस्तानी कहते थे।

कैलाशनाथ

न जाने वह दिन हिन्दुस्तान में कब आयेगा बेटा जब हिन्दु मुसलमान का भेद न रहेगा। जब मस्जिद मन्दिर के झगड़े दूर हो जायेंगे। जब कुरान और गीता एक ही धर्म की पुस्तकें हो जायेंगी।

रामचरण

वह दिन जल्दी ही आने वाला है पिताजी! हरि—तो भैया चलो! [रामचरण उठता है, सब उठते हैं और कैलाशनाथ तथा परमेश्वरी को छोड़ कर सब चले जाते हैं।

कैलाशनाथ

(परमेश्वरी से) अरे तुमको यह क्या होगया है? जाओ, कुछ अच्छे व्यंजन बनवाओ। तुम इतनी उदास क्यों हो? आज

घमन्त है और आज तुम्हारा रामचरण घर लौटा है। तुम्हें तो प्रसन्न होना चाहिये कि तुम्हारे लाल का आज जनता स्वागत कर रही है। देश के वीरों में आज उसकी गिनती है।

परमेश्वरी

मेरी दशा किसी भिखारिन रानी की तरह हो रही है आज। मैं फूली नहीं समाती थी अभी अभी। पर अब मेरा सारा आनन्द जैसे लुट गया है। देखती हूँ कि मेरा राम, राम नहीं रहमान बनकर आया है। वह अब मेरा राम नहीं रहा, वह करीमा का रहमान हो गया है। वह विधर्मी है अब।

कैलाशनाथ

तुम तो बस पागल ही बनी रहोगी। अरे मैं कहता हूँ, अब देश में राम रहमान का भेद नहीं रह सकता। जिन्ना कितना ही पाकिस्तान पाकिस्तान चिल्लाए। पर हिंदू मुसलमान दो फेफड़ों की तरह हैं, वे टूट नहीं सकते।

परमेश्वरी

न जाने तुम क्या कहते हो। मुझे तो मेरे भगवान की भौं टेढ़ी दिखाई देरही है। [ऊपर की ओर देख कर] हा भगवान! आज के दिन तुमने मुझे यह क्या दिखाया।

[गिरने लगती है, कैलाशनाथ सम्हालते सम्हालते ले जाते हैं]

(पर्दा गिरता है)

राजमार्ग

[एक जुलूस निकल रहा है- कोई ५ हजार व्यक्ति होंगे। आगे आगे घोड़े पर एक बालिका है, जिसके हाथ में तिरंगा झंडा है, पीछे कई बालिकायें हैं। एक घोड़े पर जुलूस के बीच में रामचरण है]

प्रयाण गीत

हम स्वतन्त्र भारतीय सैन्य के सिपाही !
हम स्वतन्त्रता प्रयाण के असंख्य राही !

(१)

वीर श्री सुभाष ने अमोल चित्र आँका
शत सहस्त्र सैन्य ने स्वदेश ओर झाँका

आह, बंधे आज हाथ
कोटि कोटि किन्तु साथ

शत्रु हपकान करे आज बाल बांका
धूल में मिली सदै क्रूर बादशाही !
हम स्वतन्त्र भारतीय सैन्य के सिपाही !

(२)

यह दुरंत दासता चुभी त्रिशूल फांसी
आज उठा पेशवा कि आज उठी झांसी

आज उठे सिक्ख संग
आज उठे अंग बंग

मिले जन्म जेल, मिले सूलियां कि फांसी
किन्तु बुझेगी न कभी आग प्राण दाही
हम स्वतन्त्र भारतीय सैन्य के सिपाही !

(३)

दिल्ली चलो आज यही देश ने पुकारा
जय हिंद आज उठा घोष यह हमारा
दिल्ली जय, चलो हिंद
साक्षी हो गंग सिंध
आज जिये बार बार यह सुभाष प्यारा
हो स्वतन्त्र मातृ भूमि पूर्ण चित्त चाही
हम स्वतन्त्र भारतीय सैन्य के सिपाही

नारे

"आज़ाद हिन्द : जिन्दाबाद"
"नेताजी की : जय"
"हमारा नारा : जय हिन्द"

[जुलूस घूमता है। एक ऊँचे स्थान पर रामचरण खड़ा है। कुछ बालिकायें आकर माला पहनाती हैं—एक बालिका अपने अंगूठे के खून से तिलक लगाती है।]

रामचरण

(भाषण) आजादी के दीवानों !

आजाद हिन्द फौज ने देश का एक नया इतिहास लिखना चाहा था। वह इतिहास अभी अधूरा है। उसे पूरा करने के लिए हमें घर घर में आजाद हिन्द फौज के सिपाही तैयार करने हैं।

हमारे नेताजी मरे नहीं हैं। वे मर नहीं सकते। वे एक दिन फिर आयेंगे। हमें उनके स्वागत के लिये तैयार रहना है।

जब तक हमारी मातृभूमि स्वतंत्र नहीं है तब तक हमें हार नहीं माननी है। हमें अपना खून देकर अपनी आजादी पानी होगी। स्वतन्त्रता का रास्ता रक्तदान, त्याग और बलिदान का रास्ता है। हम

रक्त देंगे, हमें आजादी मिलेगी। 'दिल्ली चलो' हमारा विजय गान है। 'जय हिन्द' हमारा अभिवादन है। बस मुझे इतना ही कहना है आज के अवसर पर। जय हिन्द।

[जुलूस उसी प्रकार प्रयाण करता हुआ निकल जाता है]

तीसरा दृश्य

कोठी का एक कमरा

[बगल में भगवान कृष्ण की मूर्ति सामने दीपस्तम्भ पर दीपक जल रहा है। मूर्ति के सामने एक चौकी पर पूजा के कुछ उपकरण रक्खे हुए हैं। परमेश्वरी बैठी दिखाई देती है। परमेश्वरी सामने रक्खी आरती जला कर उठ कर आरती करती है और आरती को मूर्ति के आगे रख देती है।

कैलाशनाथ

(प्रवेश करके) चलो भोजन कर। चल कर। जब से रामचरण करीमा दोनों आये हैं तब से उनके मुंह पर हँसी की एक भी रेखा नहीं देखी तुम्हारा हृदय कैसा निष्ठुर होगया ?

परमेश्वरी

जब तक मेरे भगवान न कहेंगे तब तक मैं रामचरण को कैसे स्वीकार करूं ?

कैलाशनाथ

अरे, अब तुम यह बुढिया-पुराण छोडो। दुनिया बहुत आगे बढ गई है और तुम अब भी पुरानी ही ठौर जमी बैठी हो। धरती तब से न जाने कितनी बार घूम गई और तुम पहाड़ की तरह अचल हो! जात पांत और मजहब के टुकड़े सब मिट जायेंगे। सारी दुनिया एक हो जावेगी। मनुष्य का एक ही वर्ग होगा 'मनुष्य'। नाम, धाम, रंग, रूप, धर्म जाति का कोई भेद नहीं होगा।

परमेश्वरी

(अरुचि की मुद्रा में) होगा। उसे देखने को भगवान् मुझे न छोड़ें। पुराण में यही लिखा है कि एक दिन कलियुग आ जायगा। धर्म नष्ट हो जायगा और प्रलय हो जायगी।

कैलाशनाथ

प्रलय के पीछे ही नई सृष्टि होती है, यह क्या तुम्हारा पुराण नहीं कहता? बस अधूरा ही पुराण पढ़ा है तुमने? तुम उसी नवीन सृष्टि को देख लो। अब नवीन पुराण पढ़ो।

परमेश्वरी

न जाने तुम कैसी नई बात कहते हो। तुम, हरि, वीणा सब नई २ बातें किया करते हो। मेरी पुरानी बुद्धि में तो कुछ समाता ही नहीं।

हरिचरण

(प्रवेश करके) मां, भैया कहते हैं कि करीमा मुझे अपने भाई रहमान की जगह ही मानती है और 'रहमान' ही कहती है। वह रहमान और उनमें भेद नहीं मानती। (ठहर कर) उसे यह भेद बताया जायगा तो उसका दिल टूट जायगा।

वीणा

(प्रवेश करके) मां, करीमा कहती है कि भैया अब 'रहमान' ही रहेंगे क्यों कि वे 'रहमान' की जगह हैं। वह उन्हें 'रहमान भाई' ही कहेगी। मैंने कहा, नहीं वह 'रहमान' नहीं तो वह उदास हो गई।

परमेश्वरी

ठीक ही तो कहती है वह, बेटी! वह अब 'राम' नहीं हैं, 'रहमान' हो गया है।

वीणा

पर मां, मुझे तो भैया 'रहमान' जैसे लगते ही नहीं। रहमान ही रहे तो भी क्या? मेरे लिये तो राम भैया ही है।

हरिचरण

तो मां, नाम से ही क्या होता है ? करीमा के लिये वह 'रहमान' ही बने रहें तो क्या राम न रहेंगे ?

परमेश्वरी

नाम से होता कैसे नहीं ? अभी उस दिन तुम्हीं तो बादशाह राम और बेगम सीता की बात कर रहे थे और एक ही सांस में सबको खरी खोटी सुना रहे थे।

हरिचरण

परन्तु वे तो तुम्हारे ही बेटे हैं। राम रहे तो क्या और रहमान हो गये तो क्या ? क्या नाम बदलने से ही वह तुम्हारे बेटे न रहेंगे।

[परमेश्वरी की आंखें सजल हो जाती हैं]

परमेश्वरी

मैं दुखी हूँ इस समय। तुम लोग जाओ, मैं एकांत में अपने भगवान् से बातें करूंगी।

[सब लोगों का प्रस्थान]

(भगवान की मूर्ति के सामने सिर झुका कर) मुझे प्रकाश दो देवता! तुम्हारे राम ने भारत माता की स्वतन्त्रता के लिए एक साधना की थी। क्या तुम उसे आशीर्वाद नहीं दोगे ? (थोड़ी देर चुप रहती है......प्रकाश) माता के एक पुत्र रहमान ने तो राम से भी आगे जाकर मातृभूमि की बलिवेदी पर प्राण तक दे दिये। (मूर्ति फिर मुस्कराती है) मेरा राम रहमान बन कर आया है भगवान्! क्या मैं उसे स्वीकार करूं ? (मूर्ति की ओर एक टक देखती है।

परमेश्वरी अनमनी सी सिर पर हाथ रखे बैठी है।

[कैलाशनाथ और रामचरण का प्रवेश]

रामचरण

क्यों मां, मेरे रहमान बन जाने पर तुम मुझसे रूठी हो? तुमने अनशन कर रक्खा है? (परमेश्वरी चुप रहती है) बोलो मां! तुम्हारे घर में मेरे लिये कोई स्थान नहीं है? क्या मैंने तुम्हारा दूध नहीं पिया है मा!

परमेश्वरी

तू मेरा ही दूध है बेटा! परन्तु मेरा भगवान तुझसे और मुझसे भी बड़ा है। मैं उसके आगे कैसे जाऊँ। मैं रोज दीपक जला कर भगवान् की पूजा करती हूं। मुझे उस दीपक के प्रकाश में भगवान् मुस्कराते दिखाई देते हैं। तुमने माता का दुख दूर करने के लिए प्रयत्न किया, यह मैंने भगवान् से कहा तो मेरे भगवान् मुस्कराये थे। आज उन्हीं से यह कह दूं कि मेरा बेटा विधर्मी हो गया है? उनसे कहूं जो कहते हैं—सर्वधर्मा परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज? तो क्या वे आंसू नहीं बहायेंगे?

रामचरण

(सोच में पड़ कर) परन्तु तुमने भगवान् से यह नहीं कहा मां, कि करीमा के भाई रहमान ने भी तो उसी माता के लिये अपने प्राण दे दिये।

परमेश्वरी

हां, यह भी कहा था!

रामचरण

तब भगवान् ने क्या किया?

परमेश्वरी

(सोच कर) वे तो तब भी मुस्कराते रहे थे।

कैलाशनाथ

तब ठीक! तुम्हारे भगवान् विधर्मी पर प्रसन्न न होते तो मुस्कराते रहते! तुम्हारे भगवान् भी तो राम और रहमान दोनों पर एक से प्रसन्न हैं।

रामचरण

ऐसे ही तुम भी दोनों को एक सा प्यार करो मां!

परमेश्वरी

(सिर हिलाती हुई) पर मेरा राम, रहमान बन कर मेरे घर में नहीं रहेगा बेटा! मेरा राम रहता तो मैं राम की मां रहती। तू ने मुझे अपनी मां नहीं रहने दिया नहीं तो तू 'रहमान' न हो जाता।

रामचरण

मैं करीमा के लिये रहमान हूं मां! तुम करीमा को अपनी वीणा बना लो, मैं फिर से तुम्हारा ही राम हो जाऊंगा। बेचारी लड़की! 'रहमान' के ही सहारे वह जीती रही है। मेरे रहमान की अकेली धरोहर क्या तुम करीमा की मां नहीं बन सकती मां?

परमेवरी

माता के प्रेम भरे हृदय को शिलाओं के नीचे चूर चूर न कर दो बेटा! मेरे भगवान् की इच्छा बिना मैं तुम्हें भी नहीं रख सकती।

रामचरण

मैं उस भगवान् को भगवान् नहीं मानता मां, जो मुझे अपनी मां से छुड़ा दे।

[जाता है]

परमेश्वरी

रामचरण भी ठीक कहता है, मेरा मन भी यही कहता है। पर मेरे भगवान् चुप क्यों हैं।

कैलाशनाथ

माता के मक्खन जैसे कोमल प्राणों में यह फांस कहां से छिपी हुई थी! जल्दी क्यों न मनाओ अपने भगवान् को, वे भगवान् होंगे तो मान जायेंगे। जल्दी करो, कहीं तुम अपने बेटे को ही न खो बैठो। मैं जाकर उन्हें रोकता हूं।

[प्रस्थान]

[परमेश्वरी थोड़ी देर चुप रहती है]

(करीमा और रामचरण का प्रवेश)

रामचरण

मेरा निर्णय हो गया है मां! मेरी मां ने मुझे नहीं अपनाया, पर मेरी भारत मां की गोद मुझे बुला रही है। एक गोद ने मुझे गिरा दिया, दूसरी गोद मुझे उठा रही है। आओ करीमा! चलें हम तुम उसी गोद में जहां हम दोनों वीणा और रामचरण बन कर रह सकें। (द्वार की ओर जाने लगता है।)

वीणा

(प्रवेश करती हुई रोक कर) किधर जाओगे भैया?

रामचरण

जहां वीणा और करीम में कोई भेद न हो, जहां रहमान वीणा का भाई हो सकता हो, जहां करीमा राम की बहन हो सकती हो। जहां रहमान और राम, करीमा और वीणा, चारों मां की गोद में बैठ सकें, उसी मां की गोद में बैठ सकें, उसी मां के यहां जायेंगे वीणा।

वीणा

(मां के पास जाकर) मां, तुम्हारी गोद ऐसी नहीं बन सकती क्या! (हाथ झकझोर कर बोलो मां, इन्हें रोकोगी नहीं!

परमेश्वरी

(अश्रु गद्‌गद्‌ होकर) ना, राम मेरा बेटा था। वह रहमान बनने के साथ ही मर गया; अब न राम रहा, न रहमान, मैं किसे रोकूंगी ?

हरिचरण

जिस भारत मां के पास रामचरण भैया और करीमा बहन जा रहे हैं, वही भारत माता बन जाओ न तुम मां !

परमेश्वरी

मैं भारत माता बन जाऊँ ! (सहसा संज्ञाहीन हो जाती है, वीणा दौड़ कर सम्भालती है।)

रामचरण

तो जाऊँ मा !

(परमेश्वरी बोलती नहीं)

हैं मां तो बेसुध हो गई ! अब क्या होगा पिताजी !

कैलाशनाथ

कुछ नहीं, घबड़ाओ नहीं। आजकल इनको यही हो जाया करता है। जब से तीर्थ यात्रा से लौटी हैं, दिन रात भगवान्‌ के दर्शन किया करती हैं।

[धीरे धीरे परमेश्वरी के मुख पर मुस्कराहट दिखाई देती है]

परमेश्वरी

(संज्ञाही स्थिति में) बेटा रहमान ! करीमा बेटी ! मेरे राम ! मेरी वीणा ! ठहरो, तुम न जाओ। मैं तुम्हें रक्खूंगी। (आंखें खोल कर) क्या गये ?

रामचरण

नहीं मां ! मैं यहीं हूँ। मैं तुम्हें छोड़ कर कहां जाऊँगा ?

परमेश्वरी

तो आ बेटा (करीम से) आ बेटी! (दोनों को दोनों ओर लेती है।) (रामचरण को देख कर) मैं तुम्हारे शरीर में अपना रक्त देख रही हूँ। इन भोली आंखों में मेरा ही दूध छलक रहा है। इन गालों पर मेरे प्यार के चिह्न वैसे ही बने हैं। (बालों पर हाथ फेर कर) मेरे लाल! तेरी इन आंखों में मेरे भगवान् हँसते दिखाई देते हैं। मैंने अपने राम को खोया, रहमान को भी अब न खोऊँगी। मेरे राम, मेरे रहमान! मेरी वीणा, मेरी करीमा! (दोनों को चिपटा लेती है)।

समाप्त